

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग П-सण्ड 3-3प-सण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-Section (ii) प्राधिकार से प्रकाकित PUBLISHED BY AUTHORITY

90] स .

नई विरुली, सोमवार, फरवरी 19, 1990/माघ 30, 1911

No. 901

NEW DELHI, MONDAY, FEBRUARY 19, 1990/MAGHA 30, 1911

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी शासी है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रसा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

विस मंत्रालय

(प्रार्थिक कार्यविभाग) (वैकिंग प्रभाग)

प्रधिनुषनाएं

नई दिल्ली, 19 फरबरी, 1990

का.भा. 150(अ).--केन्द्रीय सरकार, बैककारी विनिधनन प्रधि-नियम, 1949 (1949 का 10), की धारा 45 की उपधारा (7) के धनुसरण में बैक भाफ यंजाबुर लिमिटेड, यंजाबुर के इण्डियन बैक के साथ ममामेलन की स्कीम के संबंध में जो उक्त उपधारा के प्रधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी, 1990 की विहिन तारीख के रूप में विनिर्विष्ट करती है।

[मंख्या 17/5/89-मी: ओ.-III(7)]

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 19th February, 1990

S.O. 150(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with Indian Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said subsection.

[No. 17|5|89-B.O. III(a)]

का था . 151(थ्र) .-- केन्द्रीय मरकार ने बैंककारी विनियमन धर्ध-नियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के श्रद्यीन भारतीय रिजर्व वैक द्वारा किए गए श्रावेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अजीन वैंक आफ शंजावर निमिटेड, शंजावर के संबंध में उपन धारा 45 की उपभारा (2) के सधीन प्रधिम्भगन प्रार्पेग

और भारतीय रिअर्वयैंक ने उक्त प्रधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदन्त मिनायों का प्राीग करने हुए, इण्डियन वैफ के साथ बैंक ग्राफ भंजाबुर लिमिटेड, थंजाबुर के समामेलन की स्कीम नैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उसन भारा की उपभारा (6) के उपबन्धों के ग्रनसार उक्तस्कीम का प्रारूप संबंधित बैंको को भेजने के पण्चान और उन्तर्भक्षम की बाबन प्राप्त सुशार्जी और स्राक्षेपों पर विकार करने के पण्चात् वह स्कीम उत्पान्तरित की है और इसे मंज्री के लिये केन्द्रीय सरकार को भैजा है।

श्रम गतः केलीय सरकार ने उनन प्रश्निनयम की आरा 45 भी उपभारा (7) हारा प्रवस्त गनिवर्धों का प्रयोग करने हुए इसमें प्राने विश्वत निवंधनों भीर शर्मों के अधीन रहने हुए इस स्कीम की मंजूरी वे की है।

बैंक आफ पन्जावूर लिमिटेब, बंधावूर अंतरफ बैंक होग।
 बोर इण्डियन वैंक अंतरिली बैंक होगा।

2. ऐसी तारीका से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त श्रक्षिनियम की धारा 45 की उपवास (7) के अधीन इस प्रजीजन के लिए विनिर्दिश्ट करें (जिसे इसमें इसके पश्चान् विहित नारीख कहा गया है) अंतरक बैंड के सभी ऋधिकार, सक्तिया, सांग, दावे, हिन, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, ग्रास्तियां और जंगम और स्थावर सम्पत्ति जिसके ध्रम्नर्गत भू-धृति केसभी आपतनों या पट्टों या करारों द्वारा आरक्षित और जनमें अंतर्विष्ट/माटकों और घन्य धनराणि में और प्रसंगविद∷कों के भन्नीन परिसर, जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी मःश्रांतय, फर्नोचर, नियोजित उपस्कर, संयंद्ध , यंद्र और नावित्र, बही, कार्यज-पत्न लेखन सामग्री स्टाक, प्रन्य स्टाक और मामान, मभी स्टाक विनिधान ग्रेयर और प्रतिमृतियो, हाथ में और अभिवहन में प्राप्य सभी हुंबियां, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निजीप लेखा (जिसके भरतगँत मार्ग पर या संक्षिप्त सुवता पर धन भी है), ब्लियन, सभी बही ऋष, बंधक, ऋण और प्रतिभृतियों के फायदे महिन धन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभृति अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी ब्रम्य, यवि कोई हों, सम्पत्ति ब्रधिकार और सभी प्रत्याभृतियों के भारित संबंधी फायके, इस स्कीम के धन्य उपबंधों के भधीन रहते हुए अंतरिती बैंक की अंवरित हो जाएंगे और उसकी सम्पत्ति और ध्रान्तियां बन जाएंगे और विष्ठित तारीख से ही अंतरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात उपमंक्षित विस्तार तक और रीति में अंतरितो सेंक के बायित्व. कर्तव्य और बाध्यनाएं होंगे और बस जाएंगे।

पूर्वेगामी उपबंधों की व्याकता प प्रतिकृत प्रभाव डाले बिला सभी संविद्याएं विलेख, वंद्यात, करार. मुक्तारकामें, विधि प्रतिनिधित्व की मंजुरियों और किसी भी प्रकृति की द्यन्य लिखानें जो विहित तारी खें के ठीक पहले प्रास्तिवशीयल या प्रभावशील हों, अंतरिती बैंक के विवद्ध या उसके पक्ष में इसमें उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशील होंगी और जैसे ही कार्यान्तित की अ। मकेंगी मानो अंतरिती बैंक के स्थान पर प्रतिरिती बैंक उसमें प्रभकार रहा हो, मानो अंतरिती बैंक के पक्ष में जारी की गयी हों।

यदि विहित तारीख को अंतरक येंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई बाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति की कोई अन्य विधिक कार्जवाही संबित है तो उसका उपणमन नहीं होगा वह यंव नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्त् वह इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए अंतरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखीं जा सकेगी।

निकारी, या तो स्वयं या प्रथने द्वारा निनित्त प्राधिकृत सिली व्यक्ति ते के द्वारा अंतरक वैंक की आस्त्रियां दम्ल कर सकेगा या उनके वायित्व ते का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध आगमो का अंतरिती वैंक को अंतरित कर देगा।

ट. अंतरक बैंक की बहियां बंद की जाएंगी और उनकी चुलता की जाएगी और तुलन-पन्न प्रथमतः 19 प्रगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जानेगा और तुलन-पन्न चार्टेड लेखाकाएं कि किया पेता फर्म द्वारा जो मारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के शिए अनुमोदिन या नामनिर्दिष्ट की गंभी हो मुगरीक्षित और प्रमाणित कराए जाएंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपक्षां के भ्रमुसार तैयार की धर्मी अतरक बैंक के तुलन-पल की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पर्मान् यथासंभव शीध्र कम्मनी रिजस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और नस्पश्चात् अंतरक बैंक से नुलन-पल या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समझ प्रस्तु करने या उसकी प्रतियां कम्पनी रिजस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पल और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी भ्रम्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबन्धों के भ्रमुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण धिवनेशन बुलाने की घोषा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अंतरक बैंक के निर्देशक बोर्ब के लिए उस धिवियम की धारा 285 की भ्रमेशानुसार धिवयेगन करना धावश्यक नहीं होगा।

- 4. 1-अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के परामर्श से निम्मिलिकत उपबंधों के अनुसार अंतरक बैंक की सम्मित्तयों और ग्रास्तियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, ग्रामित्—
 - (क) सरकारी प्रतिभृतिमों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख की विश्वमान क्षाजार वर्गे पर किया जाएगा।
- (स) (1) सरकारी प्रतिमृतियों का भूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विभिन्नमन अधिनियम, 1949 की धारा 2.4 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी प्रधिसृजना में अधिकथिल मिद्धांतों के भनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख की यथा विद्याना रूप में किया जायेगा।
 - (2) केन्द्रीय भरकार की प्रतिभृतिमों जैसे इ.कघर-प्रमाण पत्न, ट्रेजरी सबत निक्षेप प्रमाण-पत्न और केन्द्रीय सरकार की लघु सचत योजना के प्रधीन जारी की गगी कोई धन्य प्रतिभृतियां या प्रमाण पत्नों की मृह्यांकन उनके अंकित मृह्य के झाझार पर या उक्त तारीख की नकद प्राप्त मृह्य के झाझार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया अभेगा।
 - (3) जहां किसी सरकारी प्रतिभृति जैसे जमीदारी उन्मूलन बंध-पल या अन्य सामान प्रतिभृति जिसकी बाबत मूल किस्तों में बेय है, का बाजार मूल्य अभिनिश्चित नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि बहु उसका उचित मूल्य प्रदिश्चित नहीं करता है या वह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभृति का मृल्यिकन उतनी कम पर किया जायेगा जो संवत किए जाने वाले बकाया मूल और उसकी ब्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तें संदेय हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभृति के मूल्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है और जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिपक्षता है या वह मुमंगत बातों को ध्यान में रखते हुए मृक्तियुक्त समझा जाता है।

- (ग) अहां किसी प्रतिभूति, शेयर क्रियन्त,र बंघन्यत्न या प्रस्थ विनिधान का बाजार मूल्य उसके प्रसामान्य बासों से प्रभाषित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं जाना जाता है, वहां विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके ओसत बाजार मूल्यक के प्राधार पर किया जायेगा।
- (घ) जहां किसी प्रतिपृति, गेयर या क्रिवेचर या प्रत्य विनिधान का बाजार मूल्य प्रशिनिश्चित नहीं किया जासकता है, वहां जारी करने वाले समृत्यान की जिसीय स्थिति, पूर्ववर्धी पांच वर्षी के दौरान उसके द्वारा संदत्त लाभों और प्रत्य सुगंगत बात की ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे सूख्य की यदि कांई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।
- (क) वावों की तुष्टि के लिए प्राजित परिनरों भी प्रत्य सर्भा जंगम सम्पत्तिंथों और किन्ही ग्रास्तिथों का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर दिया जायेगा।
- (म) फर्नाचर और पिक्सबर, स्टाक की लेखन सामगी और प्रन्य ध्रास्तियां, यदि कोई हों का मूल्यांकन प्रति वही श्रक्षिकित मूल्य के घाधार पर या बतुली योग्य मूल्य के श्राधार पर, जो भी युक्तिपुक्त समसा जाए, किया जायेगा।
- (छ) प्रशिमों, जिनके प्रत्नर्गत कर की गरो और मिनिकाट पर भगतान की गरो हु किया भी हैं, बड़ी ऋणों और विधि प्रास्तियों की सनीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभृतियों जिनके प्रत्नर्गत उनके प्रावर्गक के कर में आरित प्रतिभृतियों भी हैं अंतरितों बैंक द्वारा परिक्षित और सत्यापित हो जायगी। तत्परवाल प्रश्निम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रीणमों में वार्रिकृत किए जार्गीन प्रयात "वे प्रश्निम जिन्हों प्रच्छा और श्रासामी से बनुनो योग्य मान, गरा है और "वे प्रश्निम, जिन्हों भासानी से बसूनी योग्य महीं माना गया है" और या जिन/की बसूनी बुबंत या शंकास्पद है।
- (1) इस स्कीम प्रयोजनों के निए दायित्वों के घात्वर्गत ऐसी सभी समाश्रित दायित्व भी है, जिसके निय अन्तरिनी बैंक से विहित तारीख को या उनके प्रवान प्रश्नो स्वर्ग के आशी से उचित रूप से हिन करने को प्राणा या भनेता को जा सकेगी।
- (2) जहां किसी धास्तिव का सूल्यांकन विहिन नारीख को प्रावारिन नहीं किया जा सकता है, वहा वह भारनीय रिजर्व बैंक के धनुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्वतों तारीख को वसूली योग्य धास्ति के रूप में जान। जायेगा। किसी धास्ति के मूल्यांकन और या किसी ध्रमि के वर्गोकरण और/या किसी दायित्व के ध्रवधारण की वाबत अंतरिती सैंक और प्रस्तरिक बैंक के बोच कोई ध्रसहमिन है, तो यह मामला धारतीय रिजर्व बैंक को निर्वेशित किया जायेगा जिसकी राय अंतिम होती, परन्तु प्रव तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अंतरिती सैंक द्वारा मर्या या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए ध्रतन्तिम रूप से प्रथमाया जायेगा।

ऐसा करना प्रावस्थक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी सकतीको शय प्राप्त करना प्रावस्थक होगा जो यह प्रास्ति की ऐसी किसी मव के भूल्यांकन या बायित्व की ऐसी कियी मद के प्रवदारण के संबंध में गांचित सपते, प्रीर ऐसी राथ प्रसिप्राप्त करने का अबब प्रश्तरक वैंक की प्रास्तिमों में पूर्ण कर से दें यहोगा। पूर्वेगामी ृजपबन्धों के भनुसार भास्तियों का मूल्यांकन और वायित्वों का भवधार धोनों बैंकों ओर उसके सदस्थीं और लेनवारी पर भावश्वकर होंगा।

- 5. प्रन्तरक मैंक की संपत्ति और ग्राह्तियों के अंतरिती मैंक की प्रम्तर होने के प्रतिफत्त स्वरूप अंतरिती मैंक इसे और निस्नलिखित खण्डों मे वर्णित बिस्तार तक अंतरिक मैंक के दायित्वों का निर्वेहन करेगा, प्रथात्:—
 - (क) विहित सारीख तक कर्मचारीवृद प्रतिभूति निक्षेपं सहित उस पर प्रमिभूत ध्याज, यथि जोई है, के साथ उस मैंक के पाम अंत तक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गरी कीई धनराशि और विहित तारीब को मभी प्रन्य बाह्य बायित्व, जिसके प्रन्तर्गत निजेष नहीं हैं, संबत्त किए जाएंगा या उसकी पूर्ण व्यवस्था की जाएंगी।

स्पष्टोकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीया तक निक्षेप पर देश व्याज संबद्ध निक्षेप का भाग माना जायेगा।

(का) प्रत्येक बचत वैंक काते या जालू काते या किसी बन्द निक्षप की बाबत जिनके अन्तर्गत सावधि निभेष, नकद ममाण-पत्न, मासिक निक्षेप, मीग या संक्षिप्त मूचना पर देय निक्षेप या प्रस्तरक बैंक के पास कोई प्रस्य निश्लेप चाह व किसी भी नाम से आने जाते हों और कोई अन्य **बा**ले जो **ब**ण्ड (क) के प्रन्तर्गत नहीं ग्राते हैं जिसके धन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देव मोमा तक स्वाज भी है। असरिती वैंक विहित सःरीख को संबंधित धारक/कों के नःम में एक सत्समान औ वैसा ही जाता खोलेगा जिसमें विद्वित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निविष्ट तथा मूल्यं कित ग्रास्तियों में से प्रत्येक स्वाते के संबंध में उपबन्ध प्रानुपातिक शेय मूल्य के रूप में जमा करगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त ग्रास्तियों में से वे ग्राप्रिम जो भ्रासानी से बसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या डबत हैं या जिसको वसूली शंकास्पद है, कोई अन्य मास्तियाँ या मास्ति के भाग जो विहिन तारीख को मूल्योंकित नहीं हैं और धन्य रकम जो ऊप खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपनन्थों के लिए अपेक्षित हैं, अपवर्शित किए जार्थेंगे और इस प्रकार मूल्योकित उका प्रास्तियों में घन्तरक वैस की जारी किए गए तारीख 19 ग्रगस्त, 1989 के मधिस्यगन भ्रादेश के पैरा 2 के खण्ड (क)(1) के माधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 19 मगस्त, 1989 को कारोगार की समाध्ति को या उसके पश्च तु और जिहित शारोब के पूर्व किसी निश्रेष खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उप पैरा के प्रश्रीत जमा की जाने वाली रकम के मर्दे की जाएगी और तदनुमा जमा की जाने वाली कम मानुपातिक शेवर होगी जिसमें ऐसा संदाय की रकम कम कर दी आएगी।

परम्तु यह और कि जहां अंशिरती बैंक को किसी विशेष जाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होते के बारे में कोई सुक्तियुक्त संदेष है तो वह रिजर्थ बैंक के प्रतुमोदन से उत्पर खण्ड (ग) के प्राधार पर उस केला में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेना जब कि प्रन्तरिती बैंक खाते में सही प्रतिशेष प्रभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पद्धीकरण

"ब्रानुपालिक" पद से, जहां तक वह उन्नत परा में ब्राना है ऐसी संबंधित रक्तमों के अनुपात में अभिन्नेत है जो 19 ग्रगस्ड, 1989 का कारोजार की समाप्ति पर बकाया सदेय है (विहित तारीख के टीक पूजवर्ती तारीख सक देय क्यांज सहित) औं जहां तक वह इस स्कीम में भ्रत्यक्ष प्राप्ता है, एसी सर्वेश्वत रकभी के अनुपात में प्रस्थित है जो तंदाय या बितरण के कमय यकाया देय है।

- (ग) जनर खण्ड (ख) में निर्निदिष्ट जमा धनरामि विए जाने के के पश्चान् अंतरिती बैंक संभवत कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीच से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम प्रधिनियम, 1961 के प्रधीन स्थापित निक्षप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पश्चान् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उम प्रधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का प्रमुगानन किया गया है, और तत्यक्यात् जब भी उम प्रधिनियम को बारा 18 की अपेक्ष की उम प्रधिनियम को बारा 18 की की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अंतरिती बैंक उस तारीख या तारीख से जिसको रकम प्राप्त होती है, सान दिन के अंदर उस खाते में देय धनराणि के बिस्तार तक, उस प्रधिनियम की घारा 18 की उपधारा (2) के प्रनुसार जयर खण्ड (च) में निर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु: -
- (1) बदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता अंद कर दिया गया है जा बह ऐसे समय पर जन्न उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्त हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अंगरिती बैंक हारी नकद रूप से किया जायेगा।
- (2) बिंद खण्ड (का) में निर्दिष्ट किसी कम के हरुदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका घासानी से पता नहीं जान पारहा है तो ऐसे व्यक्ति को देव रकम के छिए उपबन्ध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया अएगा नथा अंतरिती बैंक को किसी रकम का संदाय करना निगम के लिए धावप्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिलप नहीं आता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के अंतरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्त की बाबत संदाय करने का विनिश्वय नहीं कर निया है।
- (बा) बिहित तारीबा को अंतरिती वैंक की समादन पूंती सन्पूर्ण रक्तम और धारिक्षती को अंबूत और शंकासद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जायेगा और अंतरक वैंक की बन्य ध्रास्तियों में ध्रवक्षयण और अंतरक वैंक के सदस्यों के ध्रिकार अंतरिती वैंक के संबंध में ऐसे होंगे जोतीखे पैरा (6) में उपबन्धित हैं।
- निम्नलिकित की बाबत :—
- (क) पूर्वंबर्त पैरा के खण्ड (अर) में वर्णित पन्तेक लेखे की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के प्राधार पर किसी लेख, भवि कोई है, में गमा न किया गया प्रक्तियेष और
- (का) अंतरक मैंक में प्रत्येक शेयर का बाबत जिसकी। रक्षम का बिहित तारीख से टीका पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी और से क्षेयर पूंजी के मुद्दे तमावत्त रूप में माना गया था था ताजे (।) के अनुसरण में अंतरिती बैंक द्वारा की गयी मांग के मद्दे रक्षम संदत्त की वयी जो, संग्रहण लेखों के रूप में माना जाएगा और उसे अंतरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विवद्ध संदाय निम्नलिखिन रीति में किया जाएगा, अयति :--
- (1) (क) ग्रंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित सारीख को ग्रंतरक बैंक में ग्रान्थगित शेषर भारक के रूप में रिजिन्हीं कृत

- था (या जो इस प्रकार रिजाई इस किए जाने का हकदार होता है) ऐसं कराज्य या तरीखों से तीन माम के घंदर जो विनिद्दिन्द की जाए या जाएं, ऐसे क्षेत्रर या क्षेत्ररों और बकाया मानों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा घर्सदस रह रही घन हुन रकम का संदाय करने की घ्रमेका कर सकेना और तत्मकात यदि यह धावस्थक पत्या जाका है तो बद ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तर्ष यो धंतरक बैंक के साधारण भेयर घारक के रूप में रिजाई इस या (या जो इस प्रकार रिजाई इस किए जाने का हकदीर होता) ऐसी तर्र ख या तराख से जो विनिदिन्द की जाए, तीन मास के घंदर ऐसे सेयर पा भेयरों या बकाया मांगों यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा घरनेदान रहे रही धान हुन रकम का संदाय करने की घरेशा कर सकेना।
- (ल) भंभरक बैंक प्रत्येक मामने की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए, व्यतिक्रम की कालायधि के लिए छः प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित खंड (क) के अर्थान देय रकम के संद्याय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेगा।
- (2) श्रंतरिती नैंक, अग्नियों, कय या मितिकाटा किए गए भुगतान, हु जियों, यहां ऋणों भीर विविध ऋणों तन अन्य अस्तियों की नागत जो "ऐसे अग्निमों के रूप में जो अपन ती से बसूली योग्य नहीं है भीर या बसुली के लिए दूर्यत या शकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है: यो जो उपर पैरा 4 के आधार पर विश्वित तारीख के पश्चात पूर्णता या भागता बसुली योग्य है या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हु, संदाय की मांग भीर उसे अविति कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह भीर किसी कृष्ण या अस्ति की रक्त रकते वैंक के सन्भोदन के बिना स्व
 - (क) ऋग या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या उन्नराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बहे खाते में नहीं डालेगा।
 - (क) उसे अंतरित किन्हीं प्रतिभृतियों का या उसके द्वारा ली गयी किसी अर्थित के विकास या अन्यया व्ययत नहीं करेगा।
- (3) इसके अतिरिक्त, अंतरितों में के वैकात री विनियमन अधिनियम, 1949 की आरा 45 ज के साथ और कंपनी आधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पाँठन वकक री विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 6450 के अधीन अंतरिती मक के किसी संवर्षकं, निवेशक, प्रावंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिणीत की गयी रक्षम पि कोई हो, की मान करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक माने की पाँठिस्थितियों को स्थान में रखते हुए सभी उपलम्ध कार्यवाहियों करेगा।
- (4) श्रीतरिती त्रक, उपर्युक्त खंड (1),(2) श्रीर (3) में उल्लिखित सवी के कारण श्रपन द्वारा की एयी असूलियों में से किसी समाध्यत दायित्व की बाबन, भीर रिजर्व बैंक के पूर्व श्रमुमोवन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समाध्रित हो या अत्यातिक, की बाबन जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निर्वेश्वनों के अनुसार निर्श्वारित नहीं किया गया या भीर जो विहित तः रोख की या उसके परूच मू उवभूत हुआ है या जिसका पता चला है, संवाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरों 45क के श्रधीन उसके लिए किया गया उपरांच श्रपपित हो उपनंध कर सकेगा।
- (5) मंतरिती चैंक, उपर्युक्त खंड (1),(2) भीर (3) में अल्लिखित मदी के कारण अपने द्वारा की गयी वसू ियों में से, उस प्रयो-अनों के लिए उपगत व्यय की भीर भारतीय रिजर्व बैंक के

अनुमोबन से ऐसे प्रत्य व्ययों की जी उचित समझा जाए, उनमें से कटोती करने और उपर्युक्त खंड (4) के निबंधनों के अनुमार उसमें से रक्तम विनियोजित करने के परवास या ऐसे अतिषेत, यदि कोई हों, में से, जो ऐसे दिवस्तों की सीमा अंतिम रूप से अभिनिश्चित की जाने के पश्चात इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाधित दायिस्थों की बाबत उपबंध में से उपलब्ध हो।

- (क) निक्षेप बीमा श्रीर प्रत्येय गारंटी अधिनियम, 1961 की घारा 18 की उपधारा (2) के श्रधान श्रंमरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम श्रीर निगम द्वारा उपविधित रकम, यदि कोई ही,का संदाय करेगा, श्रीर
- (ख) ऐरं निक्षेपकर्ताच्यों के मामले में, जिनकी बाबत संनरिती बैंक द्वारा कीई रक्षम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संप्रहण खाते की अध्यत मोध्य रक्षमों का, और ऐसे निक्षेप-कर्ताच्यों के मामले में जिनकी बाबत संनरिती बैंक द्वारा कोई रक्षम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपबंधित की गयी है, निगम द्वारा किए, गए या उपबंधित मंदीय की बाबत निगम को उक्त खाने से मोध्य रक्षमों को उपवृंक्त उपखंड (क) के उपबंधों के अनुमार पहले संवस्त किए जीने के परवात उनके संग्रहण खाने में उन्हें माध्य स्निमीय यदि कोई ही, का संवाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रजाम, मींद ऐसा करना आवण्यक हो तो, अंतरिती वैक का बहियों में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा भीर प्रस्वय गरंटी निगम माधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खंड (बा) में विनिविच्ट रीति से निगम को संवस की जाएगी। परन्तु यह भीर कि अंतिनी बैंक, उपर्युक्त खंड (खा) में विनिविच्ट संदाय उस द्या में करेगा:--

- (1) यदि पैरा (5) के खंड (य) में उल्लिखिस तस्समःन या समरूप जाते को बंद नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रस्थय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्द नहीं हुन्ना है, भीर
- (2) यदि उक्त खाते को संद कर दिया गया है या बह नक्रद भुगमान केलिए परिपक्ष्य हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खंड (5) के उपखंड (क) के निबंधनों के घनुसार निश्म की णोध्य रक्तमों, भीर उस खंड के उपखंड (ख) के निबंधनों के घनुसार निक्षेपकर्ताभी के संग्रहण खाते में णोध्य रक्तमों की श्रेणी घापस में समान होगी, भीर यदि उनका संवाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान घनुपास में कभी होगी।
- (7) इस पैरा के खंड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबंधित किए जाने के परचास, प्रंतिरती बैंक, खंड (5) में निर्विष्ट रफ़मों के उस प्रतिगोष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, प्रतरक बैंक के भूतपूर्व गैयर-घारकों के खाते में गोध्य रफम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से प्रौर उम सीमा नक, जो नीचे विनिर्विष्ट है, ग्रामुपासिक संदाय करेगा;
 - (क) प्रथमतः सब द्याते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक क्रोतरक बैंक के भूतपूर्व क्रिधमान शेयरक्षारकों के द्याते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,
 - (क) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक इतरक बैंक के भूतपूर्व सामाध्य शेयर-धारकों के खाते में शोध्य एकम, यदि कोई हो और उसके पश्चातः।

- (ग) स्तीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक शंतरक बैंक के भूतपूर्व श स्विगत शेयरधारकों के खाते में गोध्य रकम, यदि कोई हो,
- (घ) उपर्युष्टत उपखंड (क), (ख) भीर (ग) में उल्लिखित सब रकम की पूर्णतः संदत्त करने के पश्चात श्रंमरिती बैंक के पास बाकी बचे श्रीक्षणेय का श्रंतरक बैंक के भूतपूर्व मामान्य भेषरधारकों के श्रीच श्रान्यानिक वितरण किया जाएगा:

परन्तु यह कि यदि कोई प्रथन उठना है कि उपर्युक्त किसी उपस्पण्ड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम गोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्श कैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उम पर विनिश्चय मंतिम होगा ।

- (8) इस पैरा में निर्दिष्ट संप्रहण खाने में सोध्य रक्षम के बारे में केवल संतरितों बैंक का वायित्व उस सोमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपविधित हैं।
- (9) विहत तारोख या ऐसा पूर्वत्तर प्रविध से, जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्थ बैंक से परामर्ण करने के पश्चात्, इस प्रयोजन के लिए विनिर्धिट करे बारह वर्ष के प्रवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निर्विष्ट किसी ऐसी मद का, जो उस तारोख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन घंनरिसो बैंक द्वारा भारतीय रिजर्थ बैंक के परामर्थ से किया जाएगा भीर घंनरिसी बैंक, उक्त मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खंड (4) में निर्विष्ट दायित्यों को पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि का जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) भीर (7) में उपविधित कम भीर रोति ने उस तारोख तक चूआयो जाने से रह गयी हो, पहुंह उन में से कटौती करके वितरित करेगा।
- (10) श्रंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती (1), (2) और (3) में उल्लिखित मदों के कारण बसून किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा के किए जाने को संमावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास ब्याज बाले निक्षेपों में, ऐसी रोति से और ऐसी सबिध के लिए, जो सामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निवेश के, विनिहित करेगा। प्राव्भूत क्याज को खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निविष्ट वायित्यों की पूर्ति के लिए उनमें उपवर्शित रोति से उपयोजित किया जाएगा।
- 7 फिसी प्रभिष्यक्त या विविधित संविधा में किसी प्रतिकृत बात के होते हुए भी, पैरा (5) में निबंधनों के प्रनुसार प्रतिरिती बैक के पास खोले गए।

भए खाते की बाबत ब्याज का संवाय किया जाएगा और उसके केवल उन या अगलें उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी वरों पर, जी अंसारती बैंक अनुवात करे जमा किया आएगा।

- 8. कोई भी निक्षेपकर्ता या मंतरक बैंक का प्रश्य लेनवार, उसके प्रति मंतरक बैंक के किसी यायित्व की बाबत मंतरिक बैंक या मंतरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विदित सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकवार महीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, मारतीय रिजर्व केंक् या मंतरिती या मंतरक बक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई कद या मध्य विधिक कार्य-वाहियां नहीं होंगी जो इस स्कीम के मनुसरण में सदमावपूर्वक की नयी है या की जाने के लिए का प्रयित है।

10 अंतरक बैंक के सभा कर्मकारी सेवा मैं बन रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिता बैंक ब्रारा उसी परिश्रमिक भीर सेवा के उन्हीं निबंधना और गतीं पर निश्वत किया गया है जो 19 भगस्त, 1989 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसी कर्मचारियों की लागू थी।

पहल्यु यह कि धतरक बैंक के ऐसे कर्मचरां, जिन्होंने ग्रंतरक बैंक या भतरित बैंक को, उस तरीख के जिसको यह स्कीम के लूं। य सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठोक धामामी एक मास के धवसान के पूर्व किसी मी समय ग्रंतरिती वैंक के कर्मचारी न होने के ध्रमन आगय के बारे में लिखित सुजना द्वारा मुंचिम किया है प्रद्योकि विवाद अधिनियम, 1947 के उपवंदों के धर्धान ऐसे, प्रतिकर, यदि कोई हो, भीर ऐसे पेंगन, उपदान भविष्य निधि भीर सेवानिवृक्ति कायवे के संदाय के लिये हकदार होंगे, जो 19 भगरत, के बंद हाने के ठोक पहले भंगरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के ग्रंबीन सामान्य तीर पर भन्नोंय हो।

परन्तु यह धौर कि शंतरक बैंक के ऐसे कर्नच रियों की बावत जितके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें श्रंतरिती बैंक के कर्मचारियों के रुप मैं नियुक्त किया गया है, श्रंतरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएना कि उसने श्रंतरिती बैंक की सेवा मैं रहने के बौरान उनकी छंटनी की वणा मैं इस श्राधार पर छंटनी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है श्रीर श्रंतरिती बैंक मैं उनके त्यानांतरण से विष्टिस नहीं हुई है।

11. मंतरिर्ता बैंक, उस त.रीख से जिसको इस स्कीम को मज्य किया जाना है, तीन वर्ष से भ्रतिश्रक श्रवधि के श्रवसीन पर, श्रतरक बैंक के कर्मजारियों को कड़ी पारिश्रमिक श्रीर सेवा के बही निवंधन श्रीर शर्ती संवाय या मंजूर करेगा जी मंतरिता बैंक के सस्सामान रेक या प्रस्थिति के कर्मजारियों को, मंतरिता बैंक के ऐसे अन्य कर्मजारियों के समान या समतूत्य श्रंतरिक बैंक के उनत कर्मजारियों के पास श्रर्नुताएं श्रीर श्रतुक्ष के अधीन रहते श्रुए ल.गू हों।

परन्तु यह कि यदि काई गंका या मतभेद उत्पत्त होता है कि उक्त कर्मचारियों में से कि नी की अहंताएं या अनुभव अंतरिसी बैंक के तत्समान रेंक या प्रस्थित के प्रत्य कर्मक रियों को अहंताए और अनुभव के समान या समनुख्य है या नहीं या वह अंतरिसी बैंक के वेतनमान में कर्मक रियों का बेतन नियत फरने के लिए अपन एं जाने वाले नियान्तीं की प्रक्रिया के संबंध में है, तो गंका या मत-भेद को जारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएन जिसका विनिष्ण्य अस्तिम होना।

13. यथास्थिति , ग्रंतरिक बैक या ग्रंतरिक्षा वैक के कर्मवारियों के लिए गठितं किसी भिष्ठिय निधि ग्रीर | या उपवान निधि के न्यासी या प्रणामक, बिहित तरी या को या उसके पश्चात यथा संभव गींग्र ग्रंतरिती बैंक के लिए गठित कर्मवारिती भींक प्रेमिश के स्थासी की, या ग्रन्थमा, जैमा भंतरिती बैंक निवेश दें, ग्रंतरिक बैक के कर्मवारियों के फायवे के लिए ग्यास में धारित सब धन ग्रीर विनिधान भंतरित कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चतात्तवर्ती धासी विनिधानों के मृत्य में किसी कमी के लिए या विहित तारीख के पहलें किए गए किसी कार्य, उपेक्षा, या व्यक्तिकम की बाबस दायी नहीं होंगे।

13. अंतरिती बैंक ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्थ बैंक को भेजेंगा, जो भारतीय रिजर्थ बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

1.4. प्रतिस्ती बींक, श्रंतरक बींक के कार्यकलाप का बिवरण, ऐसे ब्राह्म में घीर ऐसे कालिक प्रतिस्तीं पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिदिष्ट करं, अंक्षरक वैंक के ग्रेथरधारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रीका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

15. किसी ऐसी सुबना या प्रत्य तसुबना के बारे में जिसकी प्रसिद्धा बैंक द्वारा दें। जाने की प्रपेक्षा की जाती है, उस द्वारा में यह समक्षा जाएगा कि उसे सम्यक रूप से दे दिया गया है, यदि प्रतरक बैंक की पुस्तकों में रिकस्ट्रेंकिन पते पर, जब सक कि कीई नया पता प्रेनियता बैंक की पुस्तकों में रिकस्ट्रेंकिन पते पर, जब सक कि की की सम्बोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदत्त सामान्य डाक से भेज विधा गया है और ऐसी सुबना उसे डाक में डाले जाने के प्रकात/भाइतालीम पण्डे के अवसान पर सामील की गया समझा जाएगी। इसके प्रतिस्तित किसी ऐसी सुबना या संयुवना की जो सार्वजनिक हित की हो, एक या प्रधिक दीनेक समाचार पत्रां में जिनका परिचालन ऐसे स्थान पर हो जहा बैंक प्रयन कारवार का संव्यवहार कर रहा था था, विज्ञापत किया जाएगा।

16 यदि इस स्काम के किसी उपबंध या निर्वचन करते समय कोई यंका उत्पन्न होता है ता मामले को मान्ताय रिजर्व बैंक को निविद्य किया जाएना स्रोर उसकी राय निश्वायक होनी सौर संहरिती बैंक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभा सदस्यों, निभेषक्तिंसों सौर सन्य दारों तथा कार्यचारियों पर भी सौर सौर किसी अन्य व्यति पर, जिसका इन बैंक में से किसी के संबंध में कोई स्थितर या दायन्य है, आवकर होनी।

17. यदि इस स्कीम केंद्र अपबंधीं की प्रभावी नारने में कठनाई जलाक होती है तो केन्द्रीय सरकार, प्रमारिक भीर भंतरिती बैकी को या उनमें से किसी की ऐसे निवेण जी इस रकीम से प्रसंगत न हो, जारा कर सकेगी, जी केन्द्रीय सरकार की मार्ताय रिजर्य बैंक से परामर्श करने के प्रश्नात कठिनाई दूर करने के अपीजन के लिये भावस्थक या उपयुक्त प्रताह हो।

[सं. 17/5/89-- वी फ्रो III(फ)]

S.O. 151(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said Section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with the Indian Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of subsection (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

- (1) The Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur shall be the transferor bank and the Indian Bank shall be the transferee bank.
- (2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationary, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferred bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, anneal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside. India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferor bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferoe bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the

laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August, 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregeing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit adn loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (1) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,
 - (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
 - (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
 - (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
 - (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is pavable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the Security shall be valued at such

an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation

of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,
 - (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate. monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent nayable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advance considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the dated the 19-8-1989 moratorium orđer issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this subparagraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rate share less the amount of such payment.

71 21, 1 22, 128

Provided further that where the transfered bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION:

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amount remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possibly delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Cornoration Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of subsection (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that-

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to

- pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:—

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

- (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unnaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.
- (ii) the transferce bank chall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily replisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances

of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferce bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

- (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off, any such debt or asset,
- (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) the transferce bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned is clause (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5)(a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount approriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.
 - (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act. 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made

or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned is clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till paymetn in full against all the accounts has been made; and thereafter
 - (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such carlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to m clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferce bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (a) The transferce bank shall invest such moneys reansed on account or items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (in) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate regard tο the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (1V), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferce bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferoe bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferoe bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government; intimated their intention of not becoming employees of the transferoe bank, shall

be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident lund and other retirement benefits as may be ordinarily, admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the habilty for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferce bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

- (13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.
- (14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at

such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places, where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinon shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any right or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17|5|89-B.O. III(b)]

का. आ. 152(अ):—-कंन्ग्रीय मरकार, बेककारों विनियमन श्रीध-नियम, 1949 (1949 का 10), को धारा 45 की उपधारा (7) के ग्रानुसरण में पश्र सेन्द्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परुर के बैंक धाफ डिण्डया के साथ समामेशन को स्कोम के संदेध में, जो उक्त उपधारा के श्रधान केन्द्रीय सरकार, द्वारा मंजूर को गयो है, 20 फरवरों 1990 को विहित सारीख के रूप में विनिद्षिट करती है।

[京. 17/7/朝.明].-111(i)(報)]

S.O. 152(E).—In pursuance of sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said subsection.

[No.17]7]89-B O.III(i)(a)]

का.आ. 153(अ) :- - केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन प्रधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के प्रधीन भारतीय रिजर्व बैंक कारा किए गए प्रावेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के प्रभीन पश्र घ सेन्ट्रेल वैंक निमिटेड, उत्तर पहर

के संबंध में उक्त धारा 45 को उपधारा (2) के प्रधीन अधिस्थगन भ्रावेश किया है।

प्रीर भारतोय रिजर्न बैंक ने उक्त प्रिक्षितयम की धारा 45 की उपधारा (4) बारा प्रदक्त प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, बैंक भाफ इंडिया के साथ परुर नेन्द्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परुर के समामेलन की स्कोम तैयार की है।

भीर रिजर्ब केंग्न ने उक्त धारा का उपवारा (6) के उपकाशों के श्रमुमार उक्त स्काम का प्रारुप मंबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात् भीर उक्त स्काम को बाबत प्रास्त मुशकों श्रीर श्राक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् वह स्काम उपान्तरित का है झार श्रेसे मंजूर के लिये केन्द्रोय सरकार को भेजा है।

श्रव श्रतः केन्द्रीय सरकार ने उनन श्रवितियम की भारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शर्वितयों का प्रयोग करते हुए इसमें भागे विणित निकंधनों भीर शर्वी के भधीन रहने हुए इस स्कीम की मंजूरी दे दी है।

- (1) परुर सेन्द्रल बैंक लिभिटेड, उत्तर परुर धन्तरक बैंक होगा और वैंक भ्राफ इंडिया मैतरितों भैंक होगा।
- (2) ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उन्त प्रधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के मधान इस प्रयोजन के लिये विनिर्दिश्ट करें (जिसे इसमें इसके परवात विद्वित तारीख कहा गया है) भन्तरक बैंब के सभी घश्विकार, शक्षियां मांग, दावे, हिन, प्राधिकार, विलेषाधिकार, मान, ब्रास्तियां श्रीर जंगम घोर स्थावर सम्पत्ति जिसके श्रन्तर्गत भधित के सभी भाषतनों या पट्टों या करागें द्वारा श्रारक्षित भीर उनमें भन्तविष्ट/ भाडकों स्रोर मन्य धनराणियों स्रीर प्रसंगविदास्रों के मन्नीन परिसर जिसके श्रधान वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्नीचर, विमोजित उपस्कर, संयंत्र, यंत्र श्रीर माधित, वहा, कागज-पत्र लेखन सामग्री स्टाक, श्रन्य स्टाक श्रीर गामाम, सभी गटाक विनिधान भेयर और प्रतिभृतियां, ष्टाय में भीर अप्रि-वहन में प्राप्य सभी हुंडिया, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गंत सार्ग पर या संक्षिप्त सुचना ंद धन भी है), ब्लियन, सभी बही ऋण, बंधक, ऋण भीर प्रतिभृतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसको कोई प्रत्याभृति अन्तरफ वैंक के कारवार के संबंध में सभी अन्य, यवि कोई हों, सम्यति अधिकार भी, सभी प्रत्यान भृतियों के भ्रास्ति संबंधा फायदे, इस स्कोम के भ्रम्य उपबन्धों के भ्रधीन रहते हुए भन्तरिती बैंक को अन्तरित हो आएंगे घोर उसकी सम्पत्ति भीर मास्तियां बन जाएंगे घीर विहिन्न तारीख से ही मन्तरक बैंक के सभी दाबित्व, कर्तन्य ग्रीर पायदे, इसमें इसके उपबंधित विस्तार तक ग्रीर रीति में भन्तरिता बैंक के वायित्य, कर्तव्य भीर बाध्यताएं होंगे भीर बन जाएंगे।

पूर्वगामी उपबन्धों को व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव बाले बिना सभी संविधाएं विलेख, बंधपत, करार, मुखनारता में, विधि प्रतिनिधित्य को मंजूरियों भीर किसी भा प्रकृति को खन्य लिखतें जो विहित तारीख के रीक पहले आस्तिथमील या प्रभावणील हों, धन्तरितों बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें उनबंधिन विस्तार तक और रीति में प्रभावणाली होंगी श्रीर असे हो कार्यास्तित को जा सकेंगी मानी-धन्तरक बैंक के प्रभाव पर अन्तरितों बैंक उनमें पक्ष कार रहा हो, मानों वे अन्तरितों बैंक के पक्ष में जारों की गया हों।

यवि विहित तारीख को अन्तरक बैंक द्वारा या उसके विरद्ध कोई वाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति को कोई अन्य विधिन्न कार्यवाही लेखित है तो उसका उपणमन नहीं होगा वह अंद नहीं होगी या उस पर किसी भी क्या में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपयन्थों के अधीन रहते हुए अन्यरिती और के द्वारा या उसके विरद्ध जारी रखी जा राकेगी और प्रयन्तित की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश को विधि के अनुसार ६स स्कीम के उपबन्ध उस देश में स्थित किसी ऐसी श्रास्ति या वाधित्व की जो श्रन्त-रक बीक के उपक्रम के भाग है, अस्तरितो बैंक को अप्यरित या उसमें निष्ठित करने का प्रशाब स्वयं नहीं रखते तो ऐसी प्रास्ति या दायित्व के रॉबंध में प्रस्तरक बैंक का कार्य कताप बिहित ताराष्ट्र से प्रस्तरितो बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक मधिकारों में त्यस्त हो जाएगा मौर यह कार्यपालक ब्राधिकारी ऐसी सभी गवित्यों का प्रयोग कर सकेगः तथा ऐसे सभी कार्य फ्रीर बार्स कर सकेगा, जो प्रभावो रुप से इसके कार्यकलाप के परिस्तापन के प्रयोजन के लिए भन्तरक हैंक द्वारा प्रयुक्त को आ सकती या की जा सकतो है। मुख्य कार्यपालक प्रधिकारो ऐसा प्रन्तरण भीर निष्ठित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियां करेगा. जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक प्रधिकारो, या तो स्वयं या प्रथने द्वारा निमित्त प्राधिष्ठत किसी व्यक्ति के द्वारा मन्तरक कैंक की मास्तियां बसुल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वहन करेगा धीर उसके शुद्ध मागमों का मन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. भन्तरक बैंक की बहियां बद की जाएगी भौर उनकी तुलना की जाएगी भौर तुलन-पन्न प्रथमतः 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा भौर तुनन-पन्न घार्टर्ड लेखाकार तथा बार्टर्ड लेखाकारों की किसो ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए श्रमुमोदित या नामनिर्दिष्ट की गयी हो सपरी-क्षित भौर प्रमाणित कराए जाएगे।

पूर्वेगामी ैरा के उपबन्धों के अनुसार तैयार की गयी अध्यक्त बैक के सुलन-पन्न की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैक द्वारा प्राप्त हो जाने के परवाल् ययासंभव गोध्र कथ्यते रिजस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तस्वयाल अक्तरक बैंक से तुलन-पन्न या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सक्स्यों के समभ प्रस्तुन करने या उसकी प्रतियों कथ्यती रिजस्ट्रार के पास फाईल करने की या तुलन-पन्न भीर लेखों पर विचार करने के प्रयोज्यत के लिए या किसी अध्य प्रयोजन के लिए या कथ्यती श्रीधिनयम, 1956 की धारा 159 के उपबन्धों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण प्रधिवेगन सुलाने की अधेका नहीं को जाएगी और तत्वयवाल् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उस श्रीधिनियम की धारा 285 की अपेकानुसार अधिनेयम करना प्रावश्यक नहीं होगा।

- 4. 1. मन्तरिती वैंक, अन्तरक वैंक के परामशे से निम्नलिखित उपवन्धों के मनुसार मन्तरक वैंक की सम्पत्तियों भीर मास्त्रियों का मूर्त्याकन करेगा भीर वायित्यों की सगणना करेगा, मर्याल:---
 - (क) नरकारी प्रतिभृतियो से निम्न विनिधानों का मूल्यांकन विहिन नारीका की ठीक पूर्ववर्ती तारीका की विद्यमान बाजार करों पर किया जाएगा।
 - (च) (1) सरकारो प्रतिभृतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व वैक द्वारा वैककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारो का गयी प्रधिसूचना में प्रधिकयित सिद्धांतों के धनुसार विहित रीति में ठोक पूर्ववर्ती तारोख को यथा विद्यमान रूप में किया जायेगा।
 - (ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिमृतियों जैसे डाकघर-प्रमाण पन्न, ट्रेजरी बचन निक्षेप प्रमाण-पन्न और केन्द्रीय सरकार को लघु बचन योजना के प्रधीन आरो की गयी कोई घन्य प्रतिभृतियां या प्रमाण पन्नों की मृल्यांकर उनके प्रकित मृत्य के भाधार पर या उक्त तारीख को नकद प्राप्त मृल्य के भाधार पर, इन दोनों में से जो भी उक्ततर हो, किया जायेगा।
 - (iii) जहां किसी सरकारी प्रतिभृति जैसे जमीदारी उन्मूलन यंध-पन्न या धन्य सामान प्रतिभृति जिसकी बाबन मल किक्तों में देय है, का बाबार प्रति मृत्य निश्वित नहीं

किया जा सकता है या किसी कारणवश गह माना जाना है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदिश्ति नहीं करता है या वह प्रत्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभृति का मूल्यांकन उतनो रकम पर किया जायेगा जो संबंदा किए जाने वाले बकाया मूल और उपकी ब्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तों संदेव हैं, मरकार द्वारा जारा को गया किया प्रतिभृति के मूल्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है यूंधीर जिसकी वैसी हो या लगभग वैसी हो परिएक्ता है या यह बुँमुसंगत वालों को अन्त में रखारे हुए मुक्तियुक्त समझा जाना है।

- (ग) जहां किसा प्रतिभृति, शेयर बिबेंचर बंध-पत्र या घर्य विनिधान का बाजार मृत्य उसके प्रसानान्य बातों से प्रमावित हो जाने के कारण पुक्त नहीं जाना जाना है, बहां विनिधान का मूल्यं-कन किसो युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके श्रीसत बाजार मृत्यक के प्राधार पर किया जायेगा।
- (घ) जहां किसो प्रतिभृति, शेयर या बिबेंचर या अन्य वितिधात का बाजार मृत्य प्रतिनिधितन नहीं किया जा सकता है, वहां जारी करने थाने समृत्यात को वित्तीय सिवति, पूर्ववती पांच वर्षों के दौरान उपके द्वारा संबत्त लाभों और प्रत्य सुमात बातों की ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मृत्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मृत्य माना जायेगा।
- (ङ) दाओं को तृष्टि के लिए प्रीजित परिसरों भीर प्रत्य सभी जगम सम्पत्तियों घीर किन्हीं द्यातियों का मूख्यांकन उनके वाजार मूल्य पर किया जायेगा।
- (च) फर्नीचर और पिक्सचर, स्टाक को लेखन सामग्रे। भीर अन्य भाक्तियां, यदि कोई ही का मृत्यकित प्रति वही प्रधिक्तियां मृत्य के श्राधार पर या वसूनों योग्य के भाधार पर, जो भी युक्तियुक्त समक्षा जोए, किया जायेगा।
- (छ) अप्रिमीं, जिनके अन्तर्गत का की गया और निर्धाहित पर भूग-तान की गयो हुडियों भी हैं, बहां अहगों और निर्धित आस्तियों की समीका अन्तरिनों बैंक द्वारा की जाएगों और प्रित्मृतियों जिनके अन्तर्गत उसके अवश्यक के क्य में धारिन प्रतिमृतियों भी हैं, अन्तरितों बैंक द्वारा परें जिन और संस्थापित हो जाएगी। नत्स्ववात् अप्रिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रीणयों में बर्गीकृत किए आएंगे, अयीन् "वे प्रथिम जिन्हों अध्यान भीर शासानों से बसूलों योग्य माना गया है और" "वे अरिग्रत, जिन्हों आसानों से बसूलों योग्य नहीं माना गया है" और/पा जिनकी वसुलों कुबंत या शंकास्पव है।
 - (i) इस स्कोम प्रयोजनों के लिए वायिरकों के प्रत्यांत ऐसी सभी समाश्चित वायित्व भी हैं, जिनके लिए प्रत्तारेती बैंक से पिहित तारीका को या उसके पश्चास् प्रयो स्वयं के स्नोतों से उचिन रूप से पूर्ति करने की प्राशा या प्रपेक्षा की जा सकेगी।
 - (ii) जहां किसी प्रास्तित्य का मूल्यांकन विहिन तारांख को माम्रारित नहीं किया जा सकता है, वहां वह भारतीय रिजर्थ के के मनुमोबन से, भागतः या पूर्णतः किसी पक्षात्वर्ती तारीख को बमूली योग्य धास्ति के कप में जाना जायेगा। किसी धास्ति के मूल्यांकन धौर/या किसी धाप्ति के बर्गोकरण घौर/या किसी वायित्व के प्रवधारण की बाबा। धन्तरिती बैंक भौर धन्तरिक बैंक बेंच मसहमित है, तो यह मामला भारतीय रिजर्थ बैंक को निर्वोधात किया जाएगा जिल्की राय धितम होगी, गारत्रु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जानी सब तक शन्तरिती बैंक हारा मदी या उसके भाग का

मृत्यांकत इस स्कीस के प्रयोजन के लिए श्रन्तिन रूप से श्रपनाया जायेगा।

ऐसा करता धावण्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना धावण्यक होगा जो यह ब्रास्ति की ऐसी किसी किसी मद के मूल्यांकन यो दायित्व की ऐसी किसी मद के प्रवधारण के संबंध में सम् जिल समने, भीर ऐसा राय प्रभिप्राप्त करने का व्यय अन्तरक बैंक की धास्तियों में से पूर्ण कर से देय होगा। पूर्वगामी उपवन्धों के धनुसार धास्तियों का मूल्यांकन धौर वायित्वों का प्रवधारण दोनों बेकों श्रीर सदस्यों और सनेतारीं पर आबद्ध कर होगा।

5. अप्लरक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अस्तरण होने के प्रतिकल स्वरूप अन्तरिती वैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में विणित विस्तार तक अन्तरक बैंक के दायिखों का निर्वहन करेगा, अर्थात्:--

(क) विहित तार्राख तक कर्नवारी बृन्द प्रतिभृति निक्षेपी सहित उस पर प्रोदम्त ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस वैंक के पास प्रस्तरक वैंक के किसी कर्नवारी द्वारा जमा की गया कोई धनराणि धौर विहित तारीख को सभी प्रस्य बाह्य दायिल, जिसके अस्तर्गेन निक्षेप नहीं हैं, संदत्त किए जाएं। या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण:---इस पैंचं के प्रयोजन के लिए बिहित तारीख तक निक्षेप पर देव ब्याज संबद्ध निकेंग का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्येक बनत बैक खाते या चालू खाते या किसी अन्य निक्षेप की बावत जिनके घन्तर्गेत सावधि निक्षेप, मकद प्रमाण-पत्न, भासिक निक्षेप, मांग या संक्षिप्त सूत्रना पर देय निक्षेप या धन्तरिक वैक के पास कोई भन्य सिक्षेप काहे में किनी भी नाम से जाने जाते हो भीर कोई भ्रम्य खाते जो खण्ड (क) के भन्तर्गत नहीं भाते हैं जिसके भन्तर्गत इस स्कीम के प्रधीन देश सीमा तक श्याज भी है। घरतरिती वैक विहित तरिशास को संबंधित धारक कों के नाम में एक सस्समान भीर बैसा ही खात खोलेगा जिसमें विहित तर्राख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए परा (4) में निर्दिष्ट तथा मूस्यांकित मास्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपबन्ध मानुपातिक पीयर मूल्य के रुप में जमा करेगा भीर इस प्रकार मूल्यांकित उक्त प्रास्तियों में से वे भविम जो भासानी से बसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या डूबंस हैं या जिनकी बसूली शंकास्पद है, कोई ग्रन्थ क्रास्तियां या क्रास्ति के भाग जो बिहित तरिक्ष को मूल्यांकित नहीं है भीर भन्य रकम जो ऊपर खण्ड (क) में बर्णित संदाय मा उपबन्धों के लिए अपेक्षित है, अपवर्जित किए जाएंगे और इस प्रकार मुख्यांकित उक्त झास्तियों में झन्तरक वैंक को जारी किए गए नारी व 19 भगस्त 1989 के ग्रिक्षस्य न भादेश के पैरा ३ के खण्ड (क)(1) के फ्राधार पर किए गए सैदायों की संकलित रकम जोकृता।

परन्तु 19 भगरत, 1989 की कारीबार की समास्ति को य उसके पण्चात भीर बिहित करीब के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी हिसंबाय की संगणना इस उप पैरा के भ्रधीन प्रमा की जाने बाली रकम के मदें की जाएगी भीर तबनुसार जमा की जाने बाली रकम भ नृपतिक रोयर होगी जिसमें ऐसे संवाय की रकम कम कम कर वी आएगी।

परन्तु यह और कि जहां अन्तरिती बैंक को किसी विशेष खात में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में औई युक्तियुक्त संदेह है तो बह रिजयं कैंक के प्रमुसीयन से ऊपर खण्ड(ग) के शाधार पर उस लेखें में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि धन्तरिति बैंक ऐसे काते में सही धतिशेष धिभिनिश्चित नहीं कर कर लेता है।

स्पष्टीकरण :-- :

"अःनुपातिक" पद से, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसा संबंधित रक्षमों के अनुपात में अभिनेत है जो 19 अगस्त, 1989 को कारो-बाए की समाप्ति पर बकाया देव है। विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देव ब्याज राष्ट्रित) और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यन आता है, से ऐसी संबंधित रक्षमों के अनुपात में अभिनेत है जो संबाय या विकरण के समय बकाया देव है।

- (ग) ऊपर खण्ड (ख) में बिलिंडिंड जमा धनराणि दिए जाने के पश्चात प्रन्तिरिती बैंक संश्वतः कम से कम विलाब से किन्तु विद्यित तारी बा से तिन मास तक निकेप बीमा भीर प्रस्वय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अर्धाम स्थापित निकेप बीमा और प्रस्वय गारंटी नियम का (जिस इसमें इसके पश्चात निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेकाओं का अनुपालन किया गया है, और तरपण्डात जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्विष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस हारीच्या तारीकों से जिसको रकम प्राप्त होती है, सात दिन के अन्दर उस बाते में देन धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार अपर खण्ड (ख) में निर्विष्ट प्रस्पेक खातों में जमा करेगा। परन्तु:——
 - (i) यदि खण्ड (ख) में निर्विष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए एकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्त हो गया हैतो उक्त रक्षम के हकदार व्यक्ति को संदाय प्रन्तरिखी बैंग द्वारा नकद रुप से किया जायेगा।
 - (ii) यवि खण्ड(ख) में सिर्दिण्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता महीं लगाया जा सकता है या उसका प्रसानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपवन्ध स्वयं निगम की बिट्टियों में किया जाएगा और उसका पृथेक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैंक को किसी रकम का संवाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता महीं मिल जाता है और निगम के अन्तरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की वाबत संवाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।
- (घ) विहित तारीख को झस्तरिती बैंक की समावत पृंजी सम्पूर्ण रकम भीर रिक्षती को हुवंत सीर शंकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा भीर भस्तरक बैंक की घस्य भास्तियों में अवकायण भीर भन्तरक बैंक के सदस्यों के शिक्षार भन्तरिती बैंक के सबंध में ऐसे होंगे जो तीचे पैरा (6) में उपबन्धित हैं।

6. निम्निशिखित की बाबत :---

- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में विणित प्रत्येक लेखे की बाबत उस खण्ड भीर खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख यदि कोई हैं, में जमा न किया गया मिलिगेय चौर
- (का) भारतरक नैक में प्रत्येक ग्रीयर को शानत जिसकी रक्तम की विज्ञित तारी ख से ठीक पूर्व प्रत्येक ग्रीयर धारक के द्वारा सा उसकी श्रीर से श्रीयर पूंजी के महें सभावत रूप में माना गया या था भीचे (1) के भनुसरण में भन्तिरिती बैंक द्वारा की

गयी मांग के महे रकम संबद्ध की गयी थी, संबहण लेखे के क्यें में माना जाएगा और उसे ब्रक्तिसी बैंक की बहिया में में उस प्रकार वर्ज किया जाएगा और लेखा के विषय मंदाय निन्तिसिक्षय रीति में किया जाएगा, ब्रथित:—

- (1) (क) गंतिरती अंक प्रथमतः ऐसं याक्ति से जो विक्ति तारील की प्रस्तरक वैंक में प्रास्थिति सेयर घारक के क्य में रिजिन्द्री-कृत था (या जो इस प्रकार रिजिन्द्रीकृत किए जोने का हकदीर होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के प्रस्दर जो विनिविष्ट की जाए या जाएं ऐसे योगर या शेवरों भीर अकाया मांगों, यवि कोई हों, की वावत उसके हारा ध्रसंदत्त रह रही प्रमाहत रकम का संवाय करने की ध्रमेक्षा कर सकेना धौर तत्मक्वित यदि यह प्रवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विन्तित तारीख को प्रकारक वैंक के साधारण शेयरधारक के रूप में रिजिन्द्रिकृत था (या जो इस प्रकार रिजिन्द्रिकृत किए जोने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तरीख से जो विनिविष्ट की जाए, तीन माम के ध्रस्वर ऐसे येयर या येयरों या बकाया मांगों यदि कोई हो, की बाबात उसके हारा ध्रसंदत्त रह रही प्रनाप्त रकम का संवाय करने की ध्रमेक्षा कर सकेना।
 - (का) प्रस्तरक बैंक प्रत्येन मामने की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिकम की कालाबधि के लिए छः प्रतिशत वार्धिक व्यांच राहित खण्ड (का) के प्रधीन देय रकम के संदाय की मांग धौर उसे प्रवांतित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेना।
- (2) प्राम्तरिती बैंक प्रश्निमों, जय या मितिकाटा किए नेए भगलान हुंडिमों, बही ऋणों भीर विविध ऋणों तथा प्रत्य धास्तियों की वाकत जो ''ऐसे प्रश्निमों के रूप में जो धामानी से वसूली योग्य नहीं है और या कमूली के लिए बूबन या गंकास्पद है', के रूप में वर्गीकृत किया गया है : या जो ऊपर पैरा 4 के धासार पर विश्वित तारीख के पश्चित पूर्णन या भागन वसूली योग्य हैं या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवित्त कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवहीं करेगा परन्तु यह धीर किसी ऋण या धास्ति की रक्षम 50,000 खपमें से ध्रधित हैं, तो प्रभारिती बैंक भारतीय रिजर्व वैक के धनुमोदन के विना:
 - (क) ऋण या किसी प्रत्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या प्रास्ति को बट्टे खाते में नहीं उपलेगा।
 - (का) उमे अन्तरिती किन्हीं प्रतिभृतियों का या उसके द्वारा ली गयी किसी आदिन का विकय या अन्यया व्ययम नहीं करेगा।
 - (3) इसके श्रतिरिक्त, श्रन्तिरिती बैंक, बैंक री विनियमन श्रिष्ठित्तिम्म, 1949 की धारा 45ज के साथ और कम्पनी श्रिष्ठित्तिम्म, 1956 की धारा 543 के साथ भी पिठत बैंककारी विनियमन श्रिष्ठितियम, 1949 की धारा 45ठ के श्रिष्ठीत श्रन्तिरित्ती बैंक के किसी संत्रवर्तक निदेशक, श्रवत्थक या श्रन्थ अधिक री के विकट उच्च स्प्रयालय द्वारा नक्तमानी के रूप में श्रिष्ठितियों की गई रक्तम यवि कोई हो, की मांग करने श्रीर उनका संदाय गरवाने वे लिए श्रद्धिक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियों करेगा.
 - (4) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1),(2) और (4) में उन्लि-खिल मदों के कारण अनने द्वारा की गयी बसूलियों में से किसी समाश्रित दायित्व की बाबन, और रिजर्व बैंक के पूँ अनुमोदन से किसी ऐसे दाथित्य, चाहे बन् समन्त्रित हो या आत्यातिक, की यावत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निवंधनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहात तरोदा को

- या उसके पाचात् उद्भूत हुआ है या जिल्लका पता चला है, सदाय कर राज्य या उस सोमा तक, जो पैरा 45% के अधील उसके लिए किया गया उपबन्ध अप्राप्त हो, उपबन्ध कर संवेश।
- (5) प्रत्तिसी थैंक, उपयुंक्त खण्ड (1), (2) प्रौर (3) में उल्लित-खित मों के कारण प्रपंते हार। की नधी सम्मियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपनत क्याय की प्रौर भारतीय रिजर्य बैंक के प्रतुनोदन से ऐसे भन्य व्ययं की जी उल्लित समाज जाए, उनमें से कटौती करने भौर उपयुंक्त खण्ड (4) के निबन्धनों के प्रतुनार उसमें से रकम विनियोजित करने के प्रकार या ऐसे प्रतिणेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्यों की मीमा प्रतिम रूप से प्रमिनिध्वित की जाने के प्रकार हम स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित सम श्रित दायित्यों की वाबत उपवन्ध में से उपलब्ध हो।
- (क) निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंडी निगम ऋधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के ऋधीन अन्तरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबन्धित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और
- (ख) ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में, ि को बाबत भरतिरती बैक द्वारा कोई रकम निजन से प्राप्त नां की गया है, संप्रहण खाने की बाबत शोध्य रकमों का, और ज़िले निक्षेपकर्ताओं के मामले में जिनकी बाबत अन्तरिती बैक द्वारा कोई रकम निजम से प्राप्त की गयी है या निजम द्वारा उपविध्य की गयी है, निजम द्वारा किए एए या उपविध्य की बाबत निजम को उक्त खाने से पोध्य रकमों की उपयुक्त उपवाद (क) के उपबन्धों के अनुमार पहले संबत किए जाने के परवात उनके संप्रहण खाने में उन्हें शोध्य प्रतिशेष यदि बोई हों, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को गोध्य रक्षम, यदि ऐसा करना आध्यक हो तो, अंतरिती बैंक की बहियों में उपविश्वत की जाएगी तथा निक्षेप वीमा और प्रस्यय गार्रेटो निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 33 खण्ड (ख) में विनिदिष्ट रीति से निगम को संदर्भ की अएगी । परन्तु यह और कि अंतरीति बैंक, उपर्यूष्ण खण्ड (ख) में विनिदिष्ट संवाय उस दश में करेगा:---

- (1) मिंद पैरा (5) के खण्ड (ख) में उहिल खित नत्समान या समरूप खाते की बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्त नहीं हुआ है
- (2) यदि उक्त खाते को बाव कर दिया गया है या जह मकत भूगतान के लिए परिषक्त हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निज्ञ झनों के अनुसार निगम को मोध्य रकमों, भीर उस खण्ड के उपखण्ड (वा) के निबंधनों के अनुसार निक्षेणकर्ताओं के संग्रहण खाते में भौड्य रकमीं की श्रेणो श्रु भाषस में समान होगी, भीर यदि उनका सदाय पूर्णतः नहीं किया जासकता तो उतमें समान श्रृतुमापत में कमी होगी।
- (7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिश्ट सदाय के लिए जाने या सूर्णतः उपसंधित किए जाने के परवास मतरिती बैंक, खण्ड (5) में निर्दिश्ट रक्षमों के उस मितरिष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, मंतरक यैंक के मूतपूर्व शेयर-धारकों के खाते में गोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रानि से और उस मीमा तक, जो नीचे विनिर्दिश्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा-
 - (क) प्रथम तः सब जाते के लिए पूर्ण तः संदाय किए जाने तक प्रतरक बैंक के भृतपूर्व धिष्मान ग्रेथरधारकों के जाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

- (ख) हिलोयतः गश्र खाते के लिए पूर्णं तः संदाय किए जाने सक श्रंतरक बैंक के भूशपूर्व सामान्य शेयर-धारकों के खाने में शोध्य रकम, यदि कीई हो भीर उसके पश्चात् ।
- (ग) मृतीभतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने सक ग्रंतरक वैंक के भूतपूर्व शास्यागित शोयश्वारकों के खाते में शोध्य रकम, विद कोई ही,
- (व) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) भौर (ग) में उस्लिखित सब रकम को पूर्णतः संदत्त गकरने के पप्रवात मंतरिलों बैंक के पास बाकी बसे प्रधियोष का मंतरक बैंक क भूतपूर्व सामान्य जैयरकारकों के बीच मानुपालिक जिलरण किया करणा।

परम्तु यह कि अदि कोई प्रभन उठता कि उपर्युक्त किसी उपस्थापक में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है अ नहीं हो तो उसे भारताँय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया आएगा जिसका उस पर विनिध्वय भंतिम होगा।

- (8) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते मे शोध्य रकम के बारे में केवल श्रंतिरितों बैंक का वाधित्य उम्म सीमा तक समझा चाएग, जी इस स्कीम में उपबंधित है।
- (9) बिहित तारीख या ऐसी पूर्वतर धविध से जी केन्द्रीय संकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामणें करने के पण्यात, प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, बारत वर्ष के धवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निर्दिष्ट किसी ऐसों मद का, जो उस तारीख सक बच्च नहीं की जा सकता ही, मूल्यांकन अंतरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामणें से किया आएगा भीर अंतरिती बैंक, उक्त मूल्यांकन की ध्यान में रखने हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के लोड (4) में निर्दिष्ट दाथिखों की पूर्ति के लिए भावप्रक किसी ऐसों राणि को जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) भीर (7) में उपर्यक्षित कम भीर रीति से उस तारोंच तक चुकाई जाने से रह गई हो, पहले उनमें से अटौतो करके वितरित करेगा।
- (10) अंतरिती वैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (2) भीर (3) में उहिल- खित सदों क कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकों तुरम्न संवाय के लिए उसके डारा भिष्ठा किए जाने की सम्भावना नहीं है, धपने पास या किसी भन्य बैंक या बैंक के पास व्याज वासे निक्षेपों में, ऐसी रीति से भीर ऐसी भवधि के लिए, जो सामले के हत्थों भीर परि- स्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिहित करेगा। प्रोद्भूत ब्याज को खण्ड (4), (5), (6) भीर (7) में निर्विष्ट दायिलों को पूर्ति के लिए उनमें उपर्वागत रीति से उपयोजित किया जाएगा।
- 7. किसी ग्रनिष्यकित या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकृत बात के होते हुए भी, पैरा (5) के निर्वधों के , प्रनुसार अंतरितों वैक के पास खाते खोले गए नए खाते को सावत क्याज का संवाय किया जाएका भीर उसके केवल उन या अगले उत्तरकर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी वरों पर जो प्रतिरित्ती वैंक ग्रनुपात कर जमा किया जाएगा।
- 8. कोई भी निक्षेपकर्ता या अंतरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रित अंतरक बैंक के किसी दाधित की बाबत अंतरक बैंक या अंसरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहिन सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकवार नहीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्य मेंक या भेतरितों या भंतरक मैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई बाद या ग्रन्थ विधिक कार्य-बाहियां नहीं होंगाँ, जो इस स्कीम के भनुसरण में सदभावपूर्वक का गर्यों है या पाँकों जाने के लिए भाषायित है।

10. गंतरक बैंक कं सभाँ कर्मवारी सेवा में बने रहेंगे भीश यह समझा जाएगा कि उन्हें भंतरिनी बेंक द्वारा उसी पारिश्रमिक भीर सेवा के उन्ही निबंधनों भीर मतौं पर नियुक्त किया गया है जो 19 ग्राग्स्त, 1989 की काश्वार बंद होने से ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों की लागू थीं।

परन्तु यह कि प्रतरक बैंक भे एँसे कर्मचारी जिन्होंने प्रतरक बैंक भे एँसे कर्मचारी जिन्होंने प्रतरक बैंक था प्रतिरितों बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कॉम केन्द्रॉय सरकार द्वारा संजूर किया गया है, ठीक प्राणमी एक सास के प्रवस्तान के पूर्व किसी भी समय प्रतरित बैंक के कर्मचारों के होने के प्रपने प्राणय के बारे से लिखिल सूचना द्वारा सूचित किया है, प्रौद्योगिक विभाव प्रिवित्यम, 1947 के उपवच्चों के प्रवीन एँसे प्रतिकर, यदि कीई हों, प्रीर एँसे पेंशन, उपव्यान भविष्य निष्ठि प्रौर सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के लिए हकदार होंगे, जब 19 1989 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के प्रधीन सामान्य तौर पर प्रमुत्तीय हो।

परन्तु यह भीर कि अंतरक वैंक के एँसे कर्मेंबारियों को बावत, जिनके बारे में यह ममक्षा जाता है कि उन्हें भंतरिती बैंक के सारे कर्मेंबारियों में रूप में नियुक्त किया गया है, अंतरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने भंतरिती बैंक की सेवा में रहने के वौरान उनकी छटनी की दया। में इस भाषार पर छटनी प्रतिकर के संवाध का वाधित्व जिया है कि उनकों सेवा निरंतर नहीं रही है भीर अंतरिती बैंक में उनके स्थानात्वरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. मंतरिती मैंक, उस नारोख से जिसको इस स्कीम को मंजूर किया जाना है, तीन वर्ष रो मनधिक प्रविधि के अवसाल पर, मंतरक के के कमेंजारियों की बही पारिश्रमिक मौर सेवा के वही विधन भीर शर्ते संवाय या मंजूर करेंगा, जो (अंतरिती वैंक के तत्समान रेंक या प्रास्थिति के कमेंजारियों को, मंतरिती वैंक के तत्समान रेंक या प्रास्थिति के कमेंजारियों को, मंतरिती वैंक के ऐसे भ्रत्य कर्नजारियों के समान या समनुत्य भ्रत्यक वैंक के उक्स कर्मजारियों के पास भ्रहीनाएं भ्रीर भ्रतुम्य के श्रधीन रहने हुए, लागश्र हों।

परण्नु मह कि यदि कोई गंका या मनमेव बरन्जन होता है कि उकत कर्मणारियों में से किसी की अहंताएं या अनुभव अंतरितों बेंक के तत्समान रेंक या प्रास्थित के प्रन्थ कर्मजारियों को प्रहेनाएं भीर प्रमुभव के समान या समतुष्य है या नहीं या वह प्रतिरित्ती बेंक के बेतनमान में कर्मणारियों का बेतन नियत करने के लिए अपनाए जाने बाते सिद्धातों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो गंका या मठभेंद की भारतीय रिजर्व बेंक की निविष्ट किया जाएगा जिसका उत पर विनिश्चय प्रस्तिम होगा।

12. वयास्थिति, अंतरक बैंक या मंतरितों बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निष्ठि / मीर या उपदान निष्ठि के स्यासी या प्रशासक , विहित तारीका को या उसके पश्चात यदासंभव शीघ , मंतरितों बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निष्ठि भीर / या उपदान निष्ठि के न्यासा को, या मन्यया, जैसा मंतरित भैंक निर्देश दें, मंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए स्यास में मारित सब घन भीर विनिधान मंतरिक कर देंगे।

परन्तु यह कि एैसे पश्चातकर्ती स्थासी, विकिधानों के मूल्य में किसी कभी के लिए याविहित, सारीचा के पहले किए गए किसी कर्म, उपेक्षा, या व्यक्तिजम विकादारी नहीं होंगे।

1.3. अंतरिती बैंक, ऐसे विवरण भीर जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्काम के कार्या-क्यित करने के सम्बन्ध में समय-समग्र पर अपेक्षा करें।

14 मंतरिती नैक, मंतरक मैंक के कार्यमालय का विवरण ऐसे प्रापक में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व नैक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करें, मंतरक नैक के क्षेत्रस्वारकारकार को भेजेगा। ऐसे विधरणों न भेजा आनातब रोका उंग्येना कारिकः सैंक ऐसा निवेगादे।

15. किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी मंतरितीं बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस बजा में यह समझा जाएशा कि उसे सम्बक्त कर से दे दिया गया है, यदि मंतरक बैंक की पुल्तकों में रिजस्ट्रीकृत परो पर, जब तक कि कोई नया पता अंतरिति बैंक की पुल्तकों में रिजस्ट्रीकृत परो पर, जब तक कि कोई समोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदत्त सामान्या डाक से भेज विया गया है, और ऐता मूचना उसे डक में डाने जाने के पश्चान/ मड़तालीम घण्टे के अवसान पर तारील का गई समझी लाएगी इसके अतिरिक्त, जिसी ऐती मूचना या संमूचना को, जो सर्वजनिक हित की हो, एक या अधिक देनिक समाचार पत्नों में, जिनका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो चड़ा बैंठ था। कारा र क संश्तक र करा या, विवाद स्थानों पर हो चड़ा बैंठ था। कारा र क संश्तक र करा या, विवाद स्थानों पर हो चड़ा बैंठ था। कारा र क संश्तक र करा या, विवादित किया जाएगा

16 यदि इस स्कीम के किन्ने उनबंध या निर्मालन करने ससय कोई शंका उत्तल होती है तो मामने को भागतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएना और उसकी राम निश्चायक होगी और अंत-रिती बैंक भौंध अंतरक बैंह तोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदयों, तिलेग कर्नीयों और पाय लेनझरों तथा कर्ने सारियों पर भी और किसी ऐसे अस्य वाकित पर, विशा इन बैंकों में से किसी के भंजेश में कीई प्रधानार या दायित्व है, अंतरहजूर होगी।

17. यदि इस स्थीय के उपबंधों को प्रमात्री करने में कोई काठ-नाई उत्पर्य होता है तो केसीय सरकार, प्रांतरक प्रौर अंतरिशी बैंकों को या उनमें से किसी की, ऐसे निरेण, जो इस स्कीम से अवंगत महो, जारी कर सकेंगी, जो केन्द्रीय भरकार को भारतीय शिवर्य बैंक्ट से परामर्थ करने के प्रथान कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिए आयश्मक या उपयुक्त प्रतीस हो।

S.O. 153(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of subsection (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Parur Central Bank Ltd., North Parur shall be the transferor bank and the Bank of India shall be the transferee bank.

480 GI/90-3

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book dcbts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities. or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferce bank; and as from the perscribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside Indian the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf realise any assets or discharge any

liability of the transferor bank and transfer the not proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of he tansferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lav the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other puror to comply with the of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (I) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely.
- (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
- (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share. Achenture, bond or other investment is not considered

- reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and varified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferce bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee

bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely:

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, montaly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferce bank snall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro-rata snare available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery. any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amuont needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferec bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION:

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not late than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within sevent days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that —

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount refererred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for scoarately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporaion has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (d) On the prescribed date, the entire amount of the paidup capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bac and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, bo as provided for in paragraph (6) below:

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in

the following manner, namely;

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled

to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

- (b) The transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default,
- (ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferse bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by
- (iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the nurpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount approriated therefrom in terms of

clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferce bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in cause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments prorate towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made:

- (b) in the second pace, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made and thereafter;
- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pr rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferce bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferce bank shall distribute any amount of amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in inteerst bearing deposits with itself or with any other bank or banks in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferec bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferor bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the tarnsferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this sceme as been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferce bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferce bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferce bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transcror bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transfeere bank, or otherwise, as the

transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

- (13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.
- (14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17|7|89-B.O.III(i)(6)]

का आं. 154(भ): --केन्द्रीय सरकार, बैंककारी बिनियमन धिनियम, 1949 (1949 क. 10) की घारा 45 की उपधारा (7) के प्रमुसरण में बैंक प्राफ तमिलन हैं लि., तिहनल बेली के इंडियन धोजरसीज बैंक के स.ध समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के प्रधीन केन्द्रीय सरकार हारा मंजूर की गयी हैं, 20 फरवरी, 1990 को बिह्त तारीख के रूप में बिनिर्दिष्ट करती है।

[मन्या 17/7/89-वी. मो. III (iii)(i)]

S.O 154(E)—In pursuance of sub-secion (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the

20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli with Indian Overseas Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17]7[89-BO. III (iii)(a)]

का आ . 155(प):~केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनिधमन प्रधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारां 45 की लपधारा (1) के प्रधीन भारतीय रिअपं बैंक द्वारा किए गए प्रावेदन पर, उनत धारा की उपधारा (2) के प्रधीन बैंक प्राप्त तमिलतानु निमिटेंब, तिहनलवेली के संबंध में उनत धारा 45 को उपवारा (2) के प्रधीन प्रधिस्थान का देश निया है।

श्रीर भारतीय रिजर्व मैंक ने उन्त ग्रिशिनियम की धारा 45 की उपद्यारा (4) द्वारा प्रवत्त ग्रिलियों का प्रयोग करते हुए, इंडियन भोबरसीण बैंक के साथ बैंक ऑफ तिमलन हु लिमिटेड, तिचनलवेजी के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

भौर रिजर्व बैंक ने उन्त धारा की उपधारा (6) में उपबंधों के मनु-सार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों को मेजने के पश्चात भौर उन्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और घाक्षेपों पर विचार करने के पश्चात वह स्कीम उपान्तरित की है धौर इसे मंजूरी के लिए केसीय सरकार की भेजा है।

मन भनः केर्न्राय सरकार ने उक्त प्रशिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शिक्तमों का प्रयोग करते हुए इसमें आगे विणित निवंधनों और शर्ती के प्रधीन रहते हुए इस स्कीम को मंजूरी देदी है।

- (1) बैंक भाफ तमिलनाषु लिमिटेड, तिक्षतलवेली ग्रंतरक वैंक होगा ग्रीर इंडियन श्रोवरसीय वैंक ग्रंतरितो बैंक होगा।
- (2) ऐसी शारी का से जिसे केन्द्रीय सरकार उनत प्रधिनियम की घारा 45 की उपधारा (7) के प्रधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिख्य करें (जिसे इसमें इसके पश्चात किहित तारीख कता गया है) संतरक ं के सभी, अधिकार, शक्तिमी, मांग, वामे, हिन्न, 'प्राक्षिकार, विशेवा-लाभ, धास्यि भीए जंगम धीर स्थावर सम्पक्षि जिसके श्रंतर्गत भू-धृति केसभा भाषतनों या पट्टों या करारों द्वारा भारक्षित मंतर्विष्टाभाटको भीर भन्य धनराशियो भीर प्रसंग-विदामों के मधीन परिसर, जिसके ब्रधीन ये धारित हैं, सभी कार्यालय फर्नीचर, विश्रोजित उपस्कर, संपैत, यैक्ष घीर तक्षित्र, बहो, कागज्ञ-पदा लेखन सामग्री स्टाक, ग्रन्य स्टाक ग्रीर समान, सभी स्टाक विनिधान गेयर और प्रतिभृतियां, हाथ में और प्रभिवहन में प्राप्य सुपी हाय को सौर लेखा को रोक्षण वार्धकों के पत्स लेखा(जिसके मंतर्गक्ष मांगपर या संक्षिप्त भूवना पर घन भी 🕏), बुलियन, सभी बहा ऋरण, बंधक, ऋरण भीर प्रतिबृतियों के या उसकी कोई प्रत्याभृति अंतरक सहित ग्रन्थ ऋण केकारकार केसबंध में सभी श्रन्य, यदि कोई हो, सम्पत्ति ग्रधिकार: ग्रीर सभी प्रत्याभृतियां के प्रास्ति संबंधी के प्रन्य उपगर्धी के धधीन रहते हुए मंतरिली वैंक की कोए उसकी सम्पत्ति ग्रौर प्रतिस्था वन हो जायेंगे जायेंगे और विहित तःरीख सेही पंसरक वेंक के सभी धायित्व, भौर फायवे, इसमें इसके पश्वात उपबंधित विस्तार कर्सच्य रीति में ग्रंतरिती बैंक के दायित्य, कर्तेष्य भीर बाध्यताएं मोर बन ज!येंगे। भीर होंगे

पूर्वनामी उपवंधों की ध्यापकता पर प्रतिकृत प्रभाव काले बिना सभी संचिदाएं, जिले दा, अंधीज, करार मुख्यातारनामे, विविध प्रतिनिधित्व की मंज्रियों और किसी भी प्रकृति की प्रस्य लेखतें की विहित तारीख

के ठीक पहले पारितवलीन या प्रभावशील हों, मंतरिती बैंक के विवस या उसके पक्ष में इसमें उपवंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होगी भौर जैसे ही कःयोन्तित की जासकोंगी मासो मंतरक बैंक के स्थान पर अंतरिती बैंक उसमें पक्षकार रह हो, मानो वे मंतरिती बैंकों के पक्षों में जारी की गयी हों।

यदि विहित तः रोख को भंतरक बैंक हारा या उसके विरुद्ध कोदि बाद, भ्रमील या किसा भी प्रवृत्ति की कोई भ्रम्य विधिक कार्यवाही संबित है तो उसका उपशमन नहीं होगा वह बंद नहीं होगी या उस पर किसी भी स्पर में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्नु वह इस स्कीम के स्रम्य उपबंधों के भ्रधीन रहते हुए भ्रंतरिती बैंक के द्वारा या उसके बिक्क जारी रखी जा सकेगी भीर प्रवर्तित की जा सकेगा।

यवि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के भ्रत्सार इस **एकीम** के उपबंध उस देश में स्थित किसी ऐसी भ्रास्ति या दामित्व को जो अंतरक बैंक के उपक्रम के माग हैं, अंतरिती बैंक को अंतरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते नो ऐसी भास्ति या पंथित्व के संबंध में मनरक वैंक का कार्यकलाप विहित तारीख र्विक के तरसमय के मनय कार्यपालक ग्राधिकारी में न्यस्त हो जाएगा और वर् कार्यपालक प्रधिकारी ऐसी सभी जनसयों का प्रयोग कर सकेगातथा ऐसे सभी कार्य भीर बातें कर सकेगा, को प्रभावो रूप से इसके कार्यकलाय के परिसमान्य के प्रयोजन के लिए शंतरक बैंक हारा प्रयुक्त की जासकती या की जासकती है। मुख्य कार्यपालक मधिकारी ऐसा मंतरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यविद्यां करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे वेश का विधियां द्वारा प्रपेक्षित हों भीर उस संबंध में मुख्य कार्येपालक भ्रधिकारी, या तो स्थमं या भ्रपने द्वारः निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा संतरक बैंक की झास्तियां वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वेष्ट्रन करेगा भीर उसके शुद्ध ग्रानिमी का भौतरिती बैंक को अंतरित कर देगा।

3 झंतरक बैंक की बहियां बंद की जाएंगी झौर उनकी मुलना की जाएंगी और तुलन-पन्न प्रथमत: 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा और तुलन-पन्न बार्टबं लेखाकार तथा बारेबं लेखाकारों का किसी ऐसी फर्म ब्रारा जो भारतीय रिकर्य बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अन् मोदिन या नामनिर्दिष्ट की गयी हों संपरीक्षित और प्रमाणित कराए जायेंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के यनुसार तैयार की गयी मंतरक विक के तुलक-पक्ष की प्रत्येक प्रति अंतरक वैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पक्ष्वास् यथासंभय शीघ कम्पनी रिज-हार के पास फाइल की जाएगी भीर तराम्बान प्रंतरक वैंक से तुलक-पन्न या लाभ भीर हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समझ प्रस्तुत करो या उसकी प्रतियां कम्पनी रिज-हार के पास फाइल करने की या पुरत्य-पन्न भीर लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी ध्राय प्रयोजन के लिए या किसी ध्राय प्रयोजन के लिए या कम्पनी घिष्ठिनियम, 1956 की घारा 159 के उपवंधों के अनुपालन करने के लिए वाविक साधारण अधिवेशन बुलाने की ध्रमेशा नहीं की जाएगी भीर सत्यक्षात अस्तरक बैंक के निवेशक बीई के लिए उस प्रिधिनियम की घारा 285 की अपेक्षानुमार अधिवेशन करना भावश्यक नहीं होगा।

- 4(1) वितरिती बैंक, चंतरक बैंक के परामणे से निभ्निलिखित उपवेशों के धनुसार चंतरक बैंक की सम्पत्तियों भीर ध्रास्तियों का मृत्यांकम करेगा और वायिस्त्रों की संगणना करेगा, प्रथति :---
 - (क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकम विहित तारी ख की ठीक पूर्ववर्ती नारीख को विश्वमान कजार में वरों पर किया जाएगा।
 - (य) (i) सरकारी प्रतिभृतियों का मूल्योकन भारतीय रिजर्थ बैंक द्वारा बैंककारी यिनियमन प्रधिनियम, 1949 की घारा

- 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी श्राधमूचना में अधिकथित सिद्धांनों के श्रनुगार विक्ति राति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विधमतन रूप में किया जाएगी।
- (i) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभृतियों जीसे डाकचर-प्रमाण-पन्न,
 द्रेजरी सकत निक्षम प्रमाण-पन्न और केन्द्रीय
 सरकार की लब्ब स्वस्त योजना के ग्राम्योल नारी की गर्या।
 कोई ग्रस्थ प्रतिभृतियां या प्रमाण-पन्न का नृत्यांकल उनके अंकिल भूल्य के ग्राम्यार पर या
 उकत नारीख़ की नक्षद प्राप्त मूल्य के ग्राम्यार पर
 इन दोनों में में जो भी उच्चतर हो, किया
 आगोगा।
- (iii) जहां कि नी सरकारी प्रतिभृति जैसे जमींदारी उत्मृलन बंध-एत या धन्य सामान प्रतिभृति जिसकी याचन मूल किस्तों में देश हैं, का बाजार मृत्य शिभिनिष्यित नहीं फिया जा सकता है या किसी कारण-वश यह मान। नाना है कि वह उसका उचित मृल्य प्रदर्शिक नहीं करना है यह प्रत्यया उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का गृत्यांकः। उननी रकम पर किया अ।येगा जो संदन किए जानेवाले बकाया मृल्य और उराकी व्यान को मिस्तों को उस कालावधि को जिसके किस्ने देव हैं, सरकार डारा दौरान ऐसी जारी की ।यो किसी प्रतिभूति के मृत्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है और जिसको वैकी हो या स्रगभग वसी ही परिपक्षत। है या वह पूसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समझा जाता है।
- (ग) जहां किसी प्रतिभृति, शेयर डिबेंबर. तंध-पत्र या प्रस्य विसिधान का बाजार मृल्य उसके ससःसान्य कानों से प्रभावित हो जाने के कारण पुक्तिपक्ष नहीं माना जाता बहां विनिधान का मृल्यांकन किसी प्रित्तपृत्त कालाविध के धौरान उसके और बाजार सूख्यक के श्राधार पर किया जासेगा।
- (घ) जहां किसी प्रतिमृति, घेयर या विवेचर या प्रत्य विनिधान का बाजार मृत्य प्रभिनिध्चित नहीं किया जा सकता है, वहां आरो करने वाले समस्थान की विसीध स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संदल लाओं और प्रत्य सुमंगत बानों को ध्यान में रखने हुए, केवल ऐसे मृत्य को यदि कोई है, हिमाब में लिया जासेगा जो गुक्तियुक्त मस्य माना जायेगा।
- (इ) दावों की तृष्टि के लिए प्रजित परिसरों और प्रत्य सभी जंगम सम्पक्तियों और किन्हीं ग्रास्तियों का सूल्यांकन उनके साजार मृल्य पर किया जायेगा ।
- (च) फर्नीचर और पिक्सकर, स्टाक की लेखक सामग्री और प्रान्य ग्रास्त्रियों, यवि कोई हों का मृत्यांकन प्रति बही ग्रिधिकथित मृख्य के प्राधार पर या बस्की योग्य मृख्य के ग्राधार पर जो भी युक्तिबुक्त सभझा जाए, किया जायेगा।
- (छ) प्रशिमों, जिनके अंदर्गत क्या को गयो और मिनिकाटे पर भुगतान की गयी हुं हिया भी हैं, बहीं ऋणों और विधि धातित्यों की समीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जायेगी और प्रतिभृतियों जिनके अंतर्गत उसके आवरक के रूप में धारिस प्रतिभृतियों भी हैं, अंतरिती बैंक द्वारा परेक्षित और सन्यापित हो जायेंगी। तत्त्व्वान ध्रियम

भिनंक आर्थित उनके भाग भी हैं भी गोणियें में वर्गीक्षत किए जार्येने, सर्थात "वे समिम जिन्हें घच्छा और स्रासानी से बसूली योग्य माना गया है और" "वे अग्निम, जिन्हें आसाधी में बसूली योग्य नहीं माना गया है" और/या जिन्की बसूली इंदोन या शंकास्पद है।

- (i) इस स्कीम प्राप्तिकों के लिए बागित्वों के अंतर्गत ऐसी सभी समाधित दायित्व भी हैं, जिनके लिए धन्तिती बैंक से बिहित तार्गिख को या उसके पण्यात् भपने स्वयं के स्रोतों से उचित रूप से पूर्ति करने की भागा या अपेक्षा की जा सकेगी।
- (गं) जहां किसी प्रस्तित्व का मृत्यांकत विहित तारोख को प्राधारित नहीं किया जासकता है, वहां बहु भारतीय रिजर्व बैंग के अनुनेदिन ने भागतः या पूर्णतः किसी पण्चानवर्ती हारीख को बसूनो योग्य अस्ति के रूप में जाना आयेगा।

किसी आस्ति के मृत्यांकत और/या किसी ध्रिया के वर्गीकरण और या किसी द्यायत्य के अवधारण की द्यायत अंतरित वैंक और यान रक मैंक के वींच कोई ध्रमहमति है, तो यह मामला भारतीय रिजर्ब वैंक को निदेशित किया जाएगा जिसकी पाय अंतिम होती, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती सब तक अंतरित बैंक द्वारा मदों या उसके भाग का मृत्यांकत इस स्कीम के प्रयोजन के जिए ध्रनन्तिया कप से ध्रपनाया जायेगा।

ऐसा करना भावण्यक होने की दशा में रिजर्ब मैंक के लिए ऐसी तकतीकी राग प्राप्त करना आवस्यक होगा जो यह अस्ति को ऐसी किसी मद के मूल्यांकन या वायित्व की ऐसी किसी मद के भ्रवधारण के संबंध में ममुखित गमझे और ऐसी राग श्रक्षिप्रात्त करने का ब्यय भ्रन्तर वैंक की भ्रास्तियों में से पूर्ण रूप से वेय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के श्रात्मार आस्तियों का मृत्यां-कन और दायित्वों का श्रवसारण दोनों सेकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर शासद्वक रहोगा।

5. भन्तर बैंक की सम्पाल और मास्तियों के अंतरिती यैक को भन्तरण होने के प्रतिकाल स्वरूप अंतरिती बैत हमे और निरुप्तिवित खर्डों में विभाव विस्तार तक अंतरक कैंक के दायित्यों का निर्यहल करेगा, प्रथित :----

(क) विहिन तारीख तक कर्मचारीवृत्य प्रतिभृति निक्षेपों महित उस गर प्रोदणूत ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास धन्तरक येंक के किसी कर्मचारी द्वारा कमा की गया कोई धनराणि और त्रिहिन नारीख को सभी घरम बाह्य दायित्स, जिसकों अंतर्गत निक्षेप नहीं हैं, संदक्त किए जार्येगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएरी।

स्पव्टीकरण :

इस परा के प्रयोजान के लिए विहित तारीं स्त्र तक निश्रेष पर देश क्याजी संबद्ध निश्रेष का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्मेक बचन वैक खाते या चालृ खाते या किसी ग्रन्थ निक्षेप की बाबन जिनके अंतर्गन सार्वाध निक्षेप, नकद प्रमाण-पन्न, मासिक निक्षेप, मां या संक्षिप्त सूचना पर देय निक्षेप या ग्रन्तरक बेंक के पास कोई ग्रन्थ निक्षेप चा ग्रन्तरक बेंक के पास कोई ग्रन्थ निक्षेप चा ग्रन्तरक बेंक के पास कोई ग्रन्थ निक्षेप चा ग्रन्तरक बेंक के पास कोई ग्रन्थ कोई ग्री कोई ग्रन्थ खाने जो खन्ड 'क' के अंतर्गन नहीं ग्राने हैं जिसके अंतर्गन इस स्कीम के ग्रामोन देय सीसा तक ब्याख भी है। अंपरिनी बैंक विहान नारी खाको संबंधित घारकों

के बाग में एक तत्सपान और वैसा ही खाना खोलेग. जिसमें थिहिन मारीख की इस स्कीम कि प्रयोधनों के लिए पैरा (४) में निदिष्ट तथा मुख्यांकित क्रास्तिमों में से प्रत्येव खाते के संबंध में उपबन्ध आन्यातिक शेयर महत के रूप में जम। करेगा और इस प्रकार मुख्यांकित उक्त म्रास्तियो में से वे प्राप्रिम जो आसानी से थसूल योग्य नही माने गए हैं, या दुवंस हैं या जिनकी बसूली शंकास्पद है, कोई ब्रन्य ग्रास्तियांयाधास्तिकेभागजीविद्यत तारी ख भी मूल्यांकित नहीं हैं और प्रन्य रक्ष्म औ अपर खण्ड (क्र) में बर्णित संशाय या उपर्वधों के लि अपेक्षित है, भ्रषविज्ञत किए ज!गें। और इस प्रकार मुख्यांकित उक्त शास्त्रियों में प्रश्नरक बैंक को जारी किए भए तारीखा 19 प्रगस्त 1989 के प्रधिरूपगत श्रादेश के पैरा 🗵 के खण्ड (क) (1) के शाक्षार परकिए गए संदागीं की संकलित रकम अधिका।

परंतु 19 घगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मर्दे की जाएगी और तदनुसार जमा की जाने वाली रकम आमुपालिक मोयर होगी जिसमें ऐसे संदाय की रकम कम कम कर दी जाएगी।

परंतु यह भौर कि जहां श्रंतिनी बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेह है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उस केखों में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि श्रन्तरिती बैंक ऐसे खाने में सही श्रनिशेष श्रमिनिश्चित महीं बार लेता है।

स्पष्टीकरणः

"आनुपातिक" पद सं, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिन्नेत है जो 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर बकाय। देय हैं (विहित तारोख के ठीक पूर्व-वर्ती तारीख तक देय क्याज गहित) और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यत्न आता है, से ऐसी संबंधित रकमों के धनुपात में अभिन्नेत हैं जो मंदाय या वितरण के ममय बकाया देय हैं।

- (ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्विष्ट जमा धनराणि दिए जाने के पण्यात् धतिरती वैंक संभवतः कम से कम विलम्ब से किनु विहिन तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा धौर प्रत्यय गारटी नियम अधिनियम, 1961 के प्रवीन स्थापित निक्षेप बीमा धौर प्रत्यय गारटी नियम की (जिसे इसमें इसके पण्याम् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की धोक्षाओं का धनुपालन किया गया है, धौर तत्पण्याम् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्विष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, धंतरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको कम प्राप्त होती है, सात दिन के अवर उस खाते में वेस धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में निर्विष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा परण्यु:--
 - (i) यदि खण्ड (ख) में निर्विष्ट कोई खाता बंद कर दिया गथा है या वह ऐसे समय पर अब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, पिराक्व हो गया है तो उनन रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अंतरिनी बैंक द्वारा नकद रूप से किया जायेगा।

- (ii) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किनी रया के हक्तवार व्यक्ति का पता नहीं रागाया जा सकता है या उसका शामानी से पता नहीं नग पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देश रकम के लिए उपबंध स्वयं निगम की नहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप में लेखा थिया जाएगा तथा अंतरिनी बैंक को किमी रक्षम का संवाय करना निगम के लिए आवण्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल काता है भौर निगम के संतरिती बैंक के माध्यम में दुग व्यक्ति की बाबत संवाय करने का विनिष्धय नहीं कर लिया है।
- (ध) बिहित ठारीख को श्रंतिशो बैंक की समादत्त पूंजी सम्पूर्ण रक्तम श्रीर धारिक्षती को इबंग और जीकास्पद ऋण के लिए उनबंध के रूप में माना जाएना श्रीर श्रंतरक बैंक की श्रन्थ प्रास्तियों में श्रवक्षयण श्रीर श्रंतरण बैंक के सदस्यों के श्रिधकार श्रंतिरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबंधित हैं।
- 6 निम्नलिखिन की बाबत :--
- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेखे, की बाबत उस खण्ड धौर खण्ड (ग) के धाधार पर किसी निका, थवि कोई है, में जना न किया गया प्रतिगेष ; धौर
- (ख) श्रंतरक बैंक में प्रत्येक सेयर की बाजत जिसकी रकम को विहिन तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक सेपर धारक के द्वारा या उसकी श्रोर में सेयर पूंजी के महे सनादत रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अंपरिती बैंक द्वारा की गयो मांग के महे रकम संबत्त की गयो थी, संग्रहण लेखे के रूप में माना जाएगा और उसे अंपरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार वर्ज किया जाएगा और लेखा के विरुद्ध संवाय निम्नासिखत रीति में किया जाएगा, श्रीर एका के विरुद्ध संवाय निम्नासिखत रीति में किया जाएगा, श्रीर स्था
- (1) (क) श्रंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे ब्यक्ति से जो विहित तारीख को भंतरक बैंक में प्रास्थिति भेयर धारक के रूप में रिजस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रिजस्ट्रीकृत किए ज'ने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या शारीखों से तीन साम के श्रन्थर जो विनिर्दिष्ट की जाए जाएं, ऐसे ग्रेयर या भेयरों भीर कनाया मांगों, यथा कोई हों, की बाबत उसके द्वारा भ्रमदत्तरह राष्ट्री भ्रनाहृत रक्तम का संवाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्पक्षात् यदि यह अथक्ष्मक पाथा जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो बिहत तारीख को भंतरक बैंक के साक्षारण शेयर धारक के रूप मे रिजस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रिजस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख था तारीख से जो विनिर्विष्ट की आए तीन मास के भंदर ऐसे शेयर या शेयरो या बकाया मांगों, यदि कोई हो, की बावत उसके द्वारा धमंदत्त रह रही भंता- हत रकम का संवाय करने की भ्रांक्षा कर सकेगा।
- (ख) ग्रंतरक बैंक प्रस्थेक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, ब्यितिकम की कालाविधि के लिए छः प्रतिशत दाषिक क्याज हित खण्ड (क) के ग्रधीन देय रकम के संदाय की मांग ग्रीर उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कथम उठायेगा।
- (2) प्रंतिनित बैंक शशिमों, कय या मितिहाट। किए गए मुनलान, हुं हियों, यही, ऋणों श्रीर विविध ऋणों तथा श्रन्य श्रास्तियों की खाबत जो "ऐसे श्रियमों के रूप में जो श्रासानी से दसूनी योग्य नहीं है श्रीर या वसूनी के लिए इवंत या शकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है: या जो उत्तर के यैरा 4 के श्राक्षार पर विहित नारीख के पण्चात

- पूर्णन: या भागतः वसूली योग्य है या हो सकते हैं, के सम्बन्ध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और से प्रवर्तित कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और किसी ऋण या आसित की रक्ष 50,000 रुपये में अधिक हैं, तो अंतरिती बैंक भागतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिन(:
- (क) ऋण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझीता या ठहराव नहीं करेंगा या किसी ऐसे ऋण या श्रास्ति को बट्टे खाते में नहीं डालेगा।
- (का) उसे अंतरित किन्हीं प्रतिभृतियों का था उसके द्वारा ली गर्नी किनी श्रास्ति का विकथ या श्रन्थण व्ययन नहीं करेगा।
- (3) इसके श्रांतियक्त, श्रेंतिसी बैंक, बैंककारी विनियमन प्रशितियम, 1949 की धारा 45 ज के साथ भीर कम्पनी श्रधितियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन श्रधितियम, 1949 की धारा 455 के श्रधीम श्रंतिरती बैंक के किसी संग्रवर्तक, निदेशक, श्रवंधक या श्रन्थ श्रधिकारी के विस्तृ उच्च न्यायाच्य धारा नुकमानी के रूप में श्रधिनिणीत की गयी रकम यदि कोई हो, की मांग करने श्रीर उत्तः भंदाय करवाने के लिए प्रत्येक सामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहिया करेगा.
- (4) श्रंतिरक्षी बैंता, उपर्युक्त खण्ड (1) (2) और (3) में उल्लि-खित मदों के कारण श्रंपने द्वारा की गयी बसूलियों में भिसी में समाधित वायित्व की बाबत, और रिजर्ध बैंक पूर्व अनुमोवन से फिसी ऐसे वायित्व, चाहे वह समाधित मूंग या श्रद्धांतिक, की बाबत जिसे उपपुक्त पैरा (4) निबंधतों के श्रनुसार निर्धारित नहीं किया गया था श्रोर को बिहित तारीख को या उसके पश्चात् उद्मृत हुआ है या जिसका पता चला है, संदाय कर सकेंगा या उस सीमा तक, जो पैरा 45क के श्रधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपयोध्त हो, उपबन्ध कर सकेंगा।
- (5) ग्रंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) ग्रौर (3) में उल्लिखित मदों मे कारण अपने द्वारा की गयी बल्लियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे ग्रन्थ ब्ययों की जो उचित समझा जाए, उनमें से कटौती नारने ग्रीर उपर्युक्त खण्ड (4) के निवंधनों के अनुमार उसमें से रक्तम विनियोजित करने के पश्चात या ऐसे श्रृतिशेष, यदि कोई हों, में से जो ऐसे दाधिकों की सीमा अंतिम कप से ग्रीकिनिश्चित की अाने के पश्चातृ इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए युवा संगणित समाश्रित दाधिकों की लाग व्या में से उपलब्ध हो।
 - (क) निलेप कीमा और प्रस्थय गारंडी निगम प्रधिनियम, 1961 की घारा 18 की उपघारा (2) के प्रधीन प्रतिरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम प्रीर निगम द्वारा उपवधिन रकम, यदि कोई हो, का संगय करेगा, प्रीर
 - (ख) ऐसे तिक्षेपकर्ताघों के मामले में, जिनकी बाबत अंतरिती बैक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संग्रहण खाते की बाबत शोध्य रकमों का, घौर ऐसे निक्षेप-कर्ताघों के मामले में जिनकी बाबत प्रंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपबंधित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित मंदाय की बाबत निगम को उक्स खाते से शोध्य रकमों की उपयुक्त उपखंख (क) के

उपबन्धों के अनुसार पहले संदत्त किए जाने के पश्चात् उनके ग्रहण खाते में उन्हें शोध्य ग्रतिशेष यदि कौई हो, का संदाय करेगा।

परम्तु बहु कि निगम को शांध्य रकम, बदि ऐसा करना प्रावश्यक हो तो, अंतरिती बैंक को बहियाँ में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा भीर प्रत्यय गारंटी निगम माधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संबंध की जाएगा। परस्यु बहु भीर कि अंतरिती बैंक, उपर्धृक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट सी जाएगा। परस्यु बहु भीर कि अंतरिती बैंक, उपर्धृक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट संवाय उस दशा में करेगा :--

- (1) यवि पैरा (5) के खण्ड (का) में उल्लिखित तत्समः न या समरूप खाते की बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाने में प्रत्यक्ष द्वारा भूगतान के लिए परिपक्ष नहीं हुआ है, और
- (2) यदि उत्तम खाते को बन्द कर दिया गणा है या वह नकद भूगतान के लिए परिपम्ब हो गरा है।
- (6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निवन्धों के धनुसार निगम को लोध्य रकमी, और उस खण्ड के उपखण्ड (ख) के निवंधनीं के धनुसार निक्षेपकतिओं के संग्रहण खाते में लोध्य रकमीं की श्रेणी धापस में समान होगी, और यदि उनका सदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उपमें समान धनुपात में कमी होगी।
- (7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णंत उपविधित किए जाने के परवात अंतिरित्ती कैंक, खण्ड (5) में निर्दिष्ट रकमों के उस अनिर्धेष, जो उसके पास उपलब्द ही, में से, अंतरक बैंक के भूतपूर्व में पर धारकों के खाते में मोध्य रक्तम, यदि कोई हो. हेतृ एक रीति से और उस कीमा नक, जो नीचे निनिर्दिष्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा,
- (क) प्रथमन : सब खाने के लिए पूर्णनः पंदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के मूलपूर्व प्रधिमान ग्रेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कीई हो,
- (ख) किनोयतः सब खाते के लिए पूर्णनः संवाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य गोयप-धारकों के खाने में गोरध्य रकम यदि कोई हो और उसके परचात ।
- (ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णनः संबाय किए जाने नक अंतरक बैंक के मूलपूर्व झाल्यगित सैयरधारकों के झाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,
- (ध) उपर्युक्त उपखण्ड (क),(ख) और (ग) में उस्लिखित सब रकम की पूर्णतः संदत्तकरने के पक्तात् अंतरिती बैक के पास बाकी बच्चे श्रविणेष का अंतरक बैक के भूतपूर्व सामान्य णैयरधारकों के बीच श्रानुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रथन उठता है कि उपयुक्ति किसी उप खण्ड में उल्लिखित खाने के लिए कीई रक्षम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिश्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

- (8) इस पैरा में निर्विष्ट संग्रहण खाते में णोष्य रक्तम के बारे में कैवल अंतरिती बैंक का दायिस्व उस सीमा नक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपवेधित है।
- (9) बिहित तारीख या ऐसी पूर्वरतर प्रविध से, जी केण्डीय सरकार भारतीय रिजर्ब बैंक से परामणं करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए विनिविष्ट करें, बारह वर्ष के प्रवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निविष्ट किसी ऐसी मव का, जो उस तारीख तक क्यूल नहीं की जा सकी ही, मृत्याकन अंतरिनी बैंक, द्वारा मारतिय रिजर्ब बैंक के परामणें से किया जाएगा और अंतरिनी बैंक उच्चत मृत्याकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रक्षम इस पैरा के खण्ड (4) में निविष्ट वायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की जो उपर्वृत्व खण्ड (5), (6) और (7) में उपर्विध कम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गयी हो, पहने से उसमें कटौती करके वितरित करेगा।

- (10) अंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखिस मदों से कारण बसूल किए गए ऐसे धन की, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की संभावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैकों के पास क्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों की ज्ञान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे. चिनिहित करेगा। प्रोदमून ब्याज की खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निदिष्ट दायित्यों की पूर्ति के लिए उनमें उपदर्शिन रोति से उपयोजिन किया जाएगा।
- 7. किसी प्रसिष्यक्त या विवक्षित संविद्या में किसी प्रतिकृत वाधि के होते हुए भी, पैरा (5) के निवंदनों के प्राप्तार अंतरिती वैंक के पास खोले गए तए खाते की बावत ब्याभ का नंदाय किया जाएगाओर उसके केवल उनमा प्रगले उरतरवर्ती पैराओ के उपवंधी के धनुसार ऐसी दरों पर, जी अंतरिती कैंक धनुसात करें जमा किया जाएगा।
- 8. कोई भी निक्षेपकती या अंतरक बैंक या घरण जेतदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंशिरती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के मिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, घारतीय रिजर्य नैक या अंतरिकी या अंतरक नैक के खिलाफ किसी ऐसी नात के निए कोई बाद या अन्य निधिक कार्यमाहियां नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुसरण में सद्वाअपूर्यक की गयो है या की जाने के लिए आषायित है।
- 10. अंतरक बैंक के सभी कर्मचारी सेथा में बने रहेगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिनी बैंक द्वारा उसी परिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और बतों पर नियुक्त किया गया है जो 19 अगस्त, 1989 का कारबार बंद होते के ठीक पहले ऐनी कर्मचारियों की लागू थी।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मकारी जिन्होंने अं १२क बैंक या अंतरिनी बैंक को, उस भारी ख के, जिसकी यह स्कीम के खीर सरकार हारा मंजूर किया गथा है, ठीक आगासी एक मास के अवलात के पूर्व किसी भी समय अंतरिनी बैंक के कर्मकारी न होने के अपने आगाप के बारे में लिखिन सूचना हारा सूचिन किया है, अीडींगिक विवाद अधिनियस, 1947 के उपवंधों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हों, और ऐसे पेंशन, उपवान, मथिन्य निधि और सेवानिवृत्ति फायबे के संवाय के लिए हुकदार होंगे, जो 19 प्रगन्त, 1989 का कारपार के बंद होने के ठीक पहने अंतरक बैंक के प्राधिकरण निषमों के अधीन सामान्य तीर पर अनुसेव हो।

परन्तु यह और कि अंगरक बैंक के ऐसे कर्मजारियों की बाबत। जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अं तिती बैंक के कर्मजारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अंगरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरिती बैंक की सेवा में रहने के दौर न उनकी छंडनी की देशा में इस माधार पर छंडनी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है और अंतरिती बैंक में उनके स्थानांतरण से विद्यान नहीं हुई है।

11. अंतरिती बैंक, उस तारीख से जिसकी इस स्काम को संजूर किया जाना है, तीन वर्ष से अनिधिक अविधि के अवनान पर अंतरक बैंक के कर्मबारियों की वहां पारिश्रमिक और सेवा के यहां निवंधन और सर्वाय या मंजूर करेगा, जो अंतरिनी बैंक के तस्तमान रेंक या प्रास्थिति के कर्म थारियों को, अंतरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्न गरियों को समान या समलूत्य अंतरक बैंक के उत्त कर्म यारियों के पास प्रकृतिए आंत अनुमान के अर्थात रहते हुए, लागू हो।

परम्तु यह कि यदि मीई यंका या मनतेद उत्पन्न होता है कि उनत कर्मचारियों में से किसी की अहुँताएं या अनुभव अंगरिती बैंक हे लक्ष्मान रैंक या प्रास्थित के अन्य कर्मचारियों की अर्हनःए जार अनुभव के सभान या समनुख्य हैया नहीं या बहु अंतरिती बैंक के बेतनमान में लम्बारियों का बेतन नियस करने के लिए अन्तराए जाने बाले सिकार्सों की प्रक्रिया के संबंध में हैं, तो शंका या भतनेव की भारतीय रिकर्व बैंक का निर्विष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अन्तिम होगा।

12 यथास्थिति, अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक के कर्मजारियों के लिए गठिन किसी भिवन्य निधि और/श उपग्रन निधि के न्यायी या प्रशासक, विहित तारी कि को या उसके परवास यथानंभव शीध, अंतरिती बैंक के लिए गठित कर्मेकारी भविष्य निधि और या उपदान निधि के न्यासी की, या ग्रन्थया, जैसा ग्रतिर्ता बैंक निदेश दे, अंतरक बैंक के कर्मजारियों के फायदें के लिए न्यास में धारित सब धन और विनिधान अंतरित कर वेंगे।

परन्तु यह कि एसे परजातु शींन्यामी, विनिधानी के पृत्य में किसी कमी के लिए, या जिहित तारीख़ के पहले किए एए किसी कार्य, उपेक्षा या व्यक्तिकम की बाबन दायी नहीं होगी।

13. अंतरिता बैंक ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक की नेजिया, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेका करें।

14 अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के कार्यकलाए का विवरण, ऐसे प्रारूप में और ऐसे कालिक अंतरामी पर जो भारतीम रिजब बैंक इस निमिस्त विनिधिष्ट करें, अंतरक बैंक के ग्रेयरवारकों को मेजेगा। ऐसे विवरणों का मेजा जाना तब रोका जाएगा जब रजवें बैंक ऐसा निर्देश है।

15 किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी अंसरिती बैंक बारा दी जाने की उपेक्षा की जाती है, उस वधा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक रूप से दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुरूषकों में रिजस्ट्रीकृत पर्ते पा, जब तक कि कोई नया पता अंतरिकी बैंका की पुरूषकों में रिजस्ट्रीकृत न हो, प्रेषिती की सन्बंधित किया गया है और उसे पूर्व-संवरत समान्य डाक से शेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे डाक में डाले जाने के परवात भड़तानीस बच्टे के अवसान पर तामील की गर्ना समझा जाएगी। इसके अित्रिक्त, किसी ऐसी सूचना या समूचना की, जी सार्वजनिक हित की ही, एक या अधिक दैनिक समान्यार पत्रों में, जितका परिचालन ऐसे स्थानों पर ही जहां बैंक अयो कारवार ना संख्याता कर रहा था, विज्ञाय किया नाएगा।

16. यदि इस स्कीम के कियी उपबंध या निबंजन करते समय कोई शंका .स्पन्न होती है तो मामले की भारतीय रिणव बैंक की निदिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निष्चायक होती और अंतरिकी बैंक और अंतरिक बैंक दोनों पर तथा इस प्रस्तेक बैंक के सभी सदस्यों, निक्षेपकर्नाओं और अध्य सेन्दारों तथा कमेंचारियों पर भी और किनी ऐसे अध्य वाकित पर, जिसका इन बैंकों से के किनी से नंदी में कोई प्रशिक्तर या दायिस्व है, झाबद्धकर होती।

17. यथि इस स्कीम के उपबंधों की प्रनानी करने में काई कि जिनाई उत्पन्न होती है में केन्द्रीय मरकार, अंतरक और अंतरिती बैंकों की या उनमें से किसी को, ऐसे निदेश, भी इत स्कीम ने अंग्रीत हो, जारी कर सकींगे, जो केन्द्रीय सरकार की भारतिय रिजर्जन से सरसमर्थ करने के पश्चात बाठिनाई दूर करने के प्रभाजन के लिए आजर्यक या उपयुक्त प्रतिस हो।

[सं. 17 / 7-89-वी ऑत-JII (iii) आ मन्त्रेण्वर झा, मंयमत समिव

S.O. 155(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli, with the Indian Overseas Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said schme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

- (1) The Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli shall be the transferor bank and Indian Overseas Bank shall be the transferoe bank.
- (2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (/) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks bullion, all book debts, mortagage debts and other debts with the beneof securities, or any gurantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issue in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate,

or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situatcd in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or limility shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferce

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartcred accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheets and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (I) The transferce bank shall in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,
 - (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
 - (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the

purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

- (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and varified by the transferee bank. Threreafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as on meet realisable at a later date.
 - In the event of any disagreement between the

transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valation of the ttem or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this

It shall be competent for the Reserve Bank of india in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of hability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,
- (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside habilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank,

Florided that any payment made from a deposit account (e), or after the close of business on 19-3-89 and before me prescribed date, shall be seckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION :

The term 'pro rata' shall, in so far as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amoun, remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, in so far as it occurs elsewhere in this scheme mean in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution."

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been anorded. the transfered bank shall, with the least possible delay but in any case not after that three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guaran ec Corporation established under the Deposit Insurance and Cred t Guarantee Corpora ion Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Secion 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sum due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that---

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not reachly traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferce bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

ريان ۾ ريان دوجو جو ان انجيجي ۽ جين ۾ نيسي اين اين جي ان ان ان ان اين اين جي ان اين جي ان اين جي ان ان ان ان ا (d) On the prescribed date, the entary amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor rank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferce bank, be as provided for in paragraph (6) below :--

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding raragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below.

Shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

- (i) (a) The transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a defered share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) The transferce bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.
- (ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset excecds Rs. 50,000 the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

- (iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other omeer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor uder paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.
 - (b) pay to the Corporation the amount received by the transferce bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferce bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the Coropration in respect of the payment made Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the halance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter.
 - (c) in the third place, the amounts, if any due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if my, remaining in the hands of the transferce bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferce bank shall distribute any amount or amounts determined in the light

- of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or g and to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employee are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constitued for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferce bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

- (14) The transferce bank shall furnish to the shareholers of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such puriodical increases as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

INo. 17|7|89-B.O.I.|II(iii)(6)] MANTRESHWAR JHA, Jt. Secy.